यूको पटना दर्पण

यूको बैंक,पटना अंचल की हिंदी पत्रिका- अंक –2, सितंबर 2019

आवरण पृष्ठ का वर्णन

शहीद स्मारक बिहार विधान सभा के मुख्य द्वार के सामने बना हुआ है। यह स्मारक पटना के स्कूलों से आजादी की लड़ाई में जान देने वाले सात शहीदों के प्रति श्रद्धांजली है। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय विधान सभा भवन के ऊपर भारतीय तिरंगा फहराने के प्रयास में मारे गए पटना के इन शहीदों को याद रखने के लिए बिहार के पहले राज्यपाल जयरामदास दौलतराम ने 15 अगस्त, 1947 को इस स्मारक की नींव रखी थी।

शहीदों के नाम:- उमाकान्त प्रसाद सिंह, रामानन्द सिंह, सतीश प्रसाद झा, जगपति कुमार, देवीपद चौधरी, राजेन्द्र सिंह तथा राय गोविन्द सिंह की स्मृति में बनवाया गया।

यूको पटना दर्पण

यूको बैंक,पटना अंचल की गतिविधियों की झलक

एक टीम, एक स्वप्न

यूको पटना दर्पण

संपादक- मंडल

संरक्षक व प्रधान संपादक

दिलीप सिंह राठौड़
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना

परामर्शदाता

मनोज कुमार
उप अंचल प्रमुख
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना

सलाहकार- समिति

शम्भूनाथ श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक
वीणा कुमारी, मुख्य प्रबंधक

तकनीकी सहयोग

पुष्प मोहन कुमार, प्रबंधक

विशेष सहयोग

स्नेहा सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक
गुंजन कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
रंजीत रंजन, वरिष्ठ प्रबंधक

संपादक

डॉ. सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय कार्यालय का पता

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना, ब्लॉक ए,चतुर्थ तल, मौर्या लोक कॉम्पलेक्स,न्यू डाक बंगला रोड, पटना - 800001 फोन 0612- 2223953,2222925,6450671,फैक्स : 0612-2220489
ई-मेल / E Mail : zo.patna@ucobank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के हैं। यह आवश्यक नहीं है कि यूको बैंक उन/उनके विचारों से सहमत हो।

अंचल प्रबंधक का संदेश

दिलीप सिंह राठौड़
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

प्रिय मित्रो !

आप सभी को नमस्कार !

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है, " स्मृति के लिए विशाल अतीत है, कल्पना के लिए असीम भविष्य है परंतु करने के लिए सिर्फ और सिर्फ वर्तमान है जो बहुत ही क्षणिक और महत्वपूर्ण है।"

मित्रो, आज की बैंकिंग विविध आयाम लिए नित नए परिवर्तन के साथ गतिमान है। जिस प्रकार से परिवर्तन ही सृष्टि का नियम है उसी प्रकार से बैंकिंग जगत को भी नई दिशा व गति मिली है। देश को आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाने के लिए सरकारी क्षेत्र के 10 बैंकों का विलय होना भारतीय बैंकिंग जगत के इस दशक में सबसे बड़ा मंथन है। यह हमारे बैंक के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हम भारत के पूर्वी क्षेत्र में सबसे बड़े क्षेत्रीय बैंक ने रूप में अपनी दावेदारी प्रस्तुत करेंगे। बैंकिंग क्षेत्र में बहुत बड़ा बदलाव हमारे लिए स्वर्णिम अवसर है। हमें महज कुछ महीनों में ही यह भी साबित करना होगा कि हम बैंकिंग क्षेत्र में हर दृष्टिकोण से ग्राहकों को बेहतर से बेहतर सेवा प्रदान करने में सक्षम हैं। हमें पूरे उत्साह, लगन, सत्यनिष्ठा और विशेष जुनून के साथ कार्य करना है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में करीब-करीब अधिकांश बैंकों की स्थिति एक जैसी ही है। आज हमारे बैंक की स्थिति से हम सभी भलीभाँति अवगत है। हमारा लक्ष्य मुख्य रूप से वसूली, वसूली और सिर्फ वसूली है। हाल ही में हमारे बैंक ने गैर विवेकाधीन और गैर भेदभावपूर्ण / एनडीएनडी (NDND) योजना लागू किया है। जिसके तहत रु.1 करोड़ तक के बकाए राशि वाले उधारकर्ताओं के लिए सुनहरा अवसर है। इस योजना के अधीन एकमुश्त समझौता राशि जमा करने के बाद उधारकर्ता कर्ज से मुक्त हो सकते हैं। शायद यह यूको बैंक के लिए बैंकिंग के क्षेत्र में अपने तरह की विशेष योजना है जिसमें किसी भी प्रकार का कोई पक्षपात या भेदभाव नहीं है। इस माध्यम से हम अनर्जक आस्थि (एनपीए) को कम कर बैंक की स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

मित्रो, हमारे अंचल ने वसूली के क्षेत्र में बहुत ही उम्दा प्रदर्शन किया है। हमने मिशन निराकरण, मिशन उड़ान, मिशन लक्ष्य आदि के तहत आप सभी की कड़ी मेहनत और कर्तव्यनिष्ठा की बदौलत हमने इस बार भी लोक अदालत के तहत ऋण वसूली में पूरे भारत में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इसका सारा श्रेय व सम्मान आप सभी को जाता है। ऐसे सफल प्रयास को हमें निरंतर बनाए रखना होगा। किसी भी कार्य को बेहतर तरीके से करने के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित होता है। एक सच्ची टीम भावना के साथ कार्य करने से हमारा काम बहुत ही आसान हो जाता है।

हमें रिटेल (जैसे- कार लोन, होम लोन, एडुकेशन लोन, गोल्ड लोन आदि) और कासा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करना है। साथ ही साथ हमें ग्राहक सेवा को बेहतरीन बनाते हुए उन्हें त्वरित सेवा प्रदान करना है। अपने कार्यों को सही दिशा में संचालित करने के लिए हम सक्षम हैं और ग्राहक सेवा के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हैं। ग्राहकों के साथ मित्रवत और सौम्य व्यवहार हमारे व्यवसाय में वृद्धि कर सकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि किसी भी व्यवसाय और संस्था के प्रति सच्ची आस्था और भावना हो तो वह अपने आप फलीभूत होने लगता है। समय-समय पर जारी सभी परिपत्रों का अवलोकन करते रहें ताकि किसी प्रकार की मूल्यांकन करने में कोई परेशानी नहीं हो।

बैंकिंग क्षेत्र के अलावा हमारे अंचल कार्यालय ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी एक मिशाल कायम किया है। दिनांक- 30 व 31 जुलाई, 2019 को यूको बैंक द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों एवं विद्वानों ने भाग लिया। संभवतः बिहार राज्य में किसी बैंक द्वारा कराई जानेवाली इस तरह की पहली संगोष्ठी है जिसमें बैंक नराकास, उद्यम नराकास और केंद्र सरकार नराकास के कार्यपालकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सर्वोत्कृष्ट कार्य करने हेतु यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना को प्रशासनिक कार्यालय की श्रेणी में

वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए बैंक, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (भारतीय रिजर्व बैंक) की ओर से पुरस्कृत किया गया। दिनांक- 28 अगस्त, 2019 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग (पूर्वी क्षेत्र) के सर्वकार्य प्रभारी श्री निर्मल कुमार दुबे (राजभाषा कार्यान्वयन) ने हमारे कार्यालय का दौरा किया और राजभाषा के कार्यों की विशेष रूप से प्रशंसा की और कहा कि अन्य बैंकों को भी यूको बैंक की तर्ज पर कार्य करना चाहिए।

बदलती बैंकिंग की दौर में हमें नई तकनीक के बारें में विशेष जानकारी रखनी होगी। साथ ही साथ हमें अपने वर्तमान और आनेवावाले ग्राहकों को यह भरोसा दिलाना होगा कि यूको बैंक ग्राहकों की सेवा के लिए सदैव तत्पर है। खासकर हमें नई पीढ़ी के ग्राहकों (जैसे- स्कूल, कॉलेज, कॉर्पोरेट, आई. टी., ऑटोमोबाइल सेक्टर आदि में कार्यरत) को अपने बैंक के प्रति आकर्षित करना होगा। उन्हें हमें तकनीक आधारित बैंकिंग सुविधाओं के बारे में अवगत कराना होगा क्योंकि उन्हें त्वरित सेवा चाहिए और हमें उनके अनुरूप सेवा प्रदान करना होगा।

अगर आपकी शाखा में कोई मूलभूत सुविधा उपलब्ध नहीं है या किसी सामग्री या वस्तु के नहीं होने की वजह से बैंकिंग संचालन में कोई समस्या आती हो तो आप हमारे अंचल कार्यालय के संबंधित विभाग को निःसंकोच सूचित करें। अगर आपको लगता है कि संबंधित विभाग से कार्य नहीं हो रहा है तो आप संबंधित मामले के बारे में हमसे बातचीत करने के लिए स्वतंत्र हैं। हमें सभी कार्यों को नियमानुसार सुचारु रूप से करना है।

प्रधान कार्यालय द्वारा जारी विभिन्न योजनाओं (स्कीमों) से संबंधित परिपत्रों (circulars) के बारे में सभी स्टाफ सदस्यों को अवगत कराया जाए ताकि कोई भी स्टाफ किसी भी योजना के बारे में ग्राहकों को विस्तृत जानकारी प्रदान कर सके। ग्राहकों के साथ ऐसा व्यवहार करें कि वे यूको बैंक की सेवा और कर्तव्यनिष्ठा को हमेशा याद रखें। ग्राहक सेवा समिति की मासिक बैठक में ग्राहकों को वित्तीय शिक्षा, बैंक की विभिन्न योजनाओं और उनके पैसे को कहाँ व किस मद में लगाया जाए ताकि वे उसका लाभ उठा सकें। साथ ही साथ ग्राहकों को साइबर संबंधी होनेवाली विभिन्न घटनाओं के बारे में भी बताएं ताकि वे अज्ञात कॉल से सतर्क रहें।

साथियो, यह समय कुछ विशेष करने का है। यह समय भविष्य निर्माण और नया इतिहास गढ़ने व रचने का है। यह समय बुलंदियों को छूने का है। यह समय परिवर्तन का है। यह समय अंधेरे से उजाले की ओर जाने का है। यह समय बैंकिंग जगत में कुछ अनोखा व अनुपम करने का है। यह समय अपने धैर्य व संयम को बनाते हुए कर्तव्यनिष्ठा व प्रतिबद्धता का परिचय देने का है। यह समय ग्राहकों को अपने बैंक के प्रति अटूट विश्वास जगाने का है। यह समय पुरानी बातों के लिए नहीं है और न ही भविष्य के लिए विशाल कल्पना करने का है, बल्कि यह समय सिर्फ और सिर्फ वर्तमान में कुछ विशेष और अलग करने का है। यह समय चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने का है।

मित्रो, हमारे पास समय बहुत ही कम है। हमें हर पल को महत्वपूर्ण बनाना है। कुछ नए विचारों के साथ हमें उभरना होगा। हमारा वर्तमान ही भविष्य को तय करेगा। हमें अपने ग्राहकों के प्रति कर्तव्यनिष्ठा, समयनिष्ठा और प्रतिबद्धता को साबित करना होगा। उन्हें यह अहसास दिलाना होगा कि वे हमारे लिए बहुमूल्य हैं। हमें दृढ़ संकल्प होकर "एक टीम एक स्वप्न" को साकार करना है।

चलते-चलते... कहा जाता है कि विपरीत परिस्थितियों में कुछ लोग टूट जाते हैं तो कुछ लोग इन्हीं परिस्थितियों में रिकॉर्ड भी तोड़ देते हैं।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ !

(दिलीप सिंह राठौड़)
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

मनोज कुमार, उप अंचल प्रमुख

प्रिय साथियो !

आप सभी को नमस्कार !

30 अगस्त, 2019 को भारतीय बैंकिंग जगत ने एक नई करवट ली । जिसके अधीन आज की बैंकिंग बहुत ही तीव्र गति से चल रही है। हम सभी को ज्ञात है कि बदलाव ही सृष्टि का नियम है और परिवर्तन को हमने हमेशा ही स्वीकार किया है। आज आर्थिक जगत में बहुत ही ज्यादा उतार-चढ़ाव हो रहा है। यह समय बैंकिंग दुनिया में बदलाव के साथ-साथ हमारे कार्यकलापों में भी बदलाव दिख रहा है। कभी नित नई तकनीक के साथ तो कभी विभिन्न योजनाओं के साथ, ऋण वितरण की प्रक्रियाओं में गहनता तो कम समय में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की तीव्रता और हमें इन सभी को आत्मसात करते हुए चलना है। शुरुआती दौर में नई चीजों को अपनाने में असहजता जरूर महसूस होती है परंतु धीरे-धीरे हम उसे अपना लेते हैं।

मित्रो! आप सभी को मालूम है कि हमारे बैंक ने वसूली अभियान में एक नई जागृति लाते हुए एनडीएनडी :- (NDND:- Non- discretionary and Non-discriminatory) अर्थात गैर-विवेकाधीन और गैर-भेदभावपूर्ण योजना की शुरुआत की है। इसके तहत हमारे बैंक को रु. 8000 करोड़ प्रतिवर्ष की वसूली करनी है यानी प्रति तिमाही में रु. 2000 करोड़ की वसूली। इससे हमारे बैंक की प्रोविजनिंग कम हो जाएगी और लाभ ज्यादा होगा। इस योजना के अधीन उधारकर्ताओं को प्रधान कार्यालय स्तर से ही स्वीकृति पत्र प्रदान कर दी गई है और उन्हें 30 दिनों के आदर संबंधित राशि जमा करनी है। एनडीएनडी (NDND) योजना को साकार करना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार हमारे अंचल का NPA रु. 244 करोड़ था जो वर्तमान में घटकर रु. 231 करोड़ रह गया है। हाल ही में बैंक ने सिर्फ एक दिन में यानि दिनांक- 30.09.2019 को ही रु.107 करोड़ से ज्यादा की राशि वसूल की है जो बहुत ही सराहनीय पहल है। इसका सारा श्रेय और साधुता सभी यूकोजन को जाता है।

हमारे अंचल ने इस वित्तीय वर्ष (2019-20) की छमाही के अंतर्गत विशिष्ट कार्य किया है और ज्यादातर मानदंडों में हमारी स्थिति बेहतर रही है। विभिन्न वसूली योजनाओं यथा मिशन उड़ान, मिशन निराकरण, मिशन लक्ष्य आदि में हमारा अंचल हमेशा ही टॉप-3 जोन में रहा है। साथ ही साथ विभिन्न लोक अदालतों में भी हमने उम्दा प्रदर्शन करते हुए अपने अंचल को गौरवान्वित किया है। हम उम्मीद करते हैं कि आगे भी हम अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रतिबद्ध रहेंगे। हालांकि सितंबर 2019 का लक्ष्य रु. 197 करोड़ था परंतु अभी भी हम लक्ष्य से काफी पीछे हैं।

हमारी यह पूरी कोशिश होनी चाहिए कि हम ज्यादा से ज्यादा ऋण वसूली पर ध्यान दें ताकि बैंक व्यवसाय वृद्धि की ओर निरंतर बढ़ सके। पुराने ग्राहकों के साथ ऋण वसूली में व्यावसायिक कार्यकुशलता का उपयोग किया जाए ताकि वे भविष्य में भी हमारे ग्राहक बने रहें और अपने आस पड़ोस के लोगों को भी हमारे बैंक के जोड़ने का प्रयास करें। पुराने ग्राहकों से भी हमारे बैंक की व्यवसाय में वृद्धि हो सकती है क्योंकि वे मौखिक रूप से हमारे बैंक का प्रचार-प्रसार करते हैं। ऋण की वसूली में भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक और अपने बैंक द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार ही हमें कार्य करने चाहिए।

दोस्तो ! मैं आपसे यह भी कहना चाहूँगा कि किसी भी ग्राहक को कोई भी ऋण प्रदान करने से पहले सभी पहलूओं पर अपने स्तर से छानबीन कर लें। चाहे वह बातचीत के माध्यम से हो या भौतिक रूप से सत्यापन करके। हमें इसका आकलन कर लेना चाहिए कि हम जो ऋण दे रहे हैं उसका ग्राहक किस प्रकार से भुगतान कर पाएगा। अगर संबंधित खाता एनपीए (अनर्जक संपत्ति या परिसंपत्ति) हो जाता है तो हम ग्राहक से कैसे वसूली कर सकते हैं। किसी भी ऋण का संवितरण करने से पहले पुनः अपनी ओर से जांच-पड़ताल कर लेनी चाहिए। सिर्फ सभी चीजें ठीक हैं (All is Well) की तर्ज पर कार्य न करें। अपने कार्य करने की शैली में कुछ नयापन लाएँ और अपने पूरे विवेक का उपयोग करें।

हम गांधीगिरी की तर्ज पर बड़े-बड़े उधारकर्ताओं के घर या कंपनी या दुकान पर जाकर एक खिलाफ अनेक (Many Against One) यानि माओ (MAO) के तहत प्रदर्शन भी कर सकते हैं। संबंधित के लिए नारे के तौर पर आप लिख सकते हैं कि "बैंक द्वारा आपको दिया गया पैसा आम जनता का पैसा है, इसे तुरंत चुकता करें", "आप अपने ऋण क त्वरित भुगतान करें ताकि अन्य जरूरतमंदों को भी ऋण दिया जा सके", "अपने पुराने ऋण को चुकता कर देश की तरक्की व विकास में योगदान करें" आदि। अगर एक के खिलाफ अनेक (माओ) के तहत प्रदर्शन करते हैं तो संबंधित उधारकर्ता के आसपास/पड़ोस के लोगों को लगेगा कि इस कंपनी के मालिक ने बैंक से ऋण लिया है और अभीतक उसका भुगतान नहीं किया है। इससे वहाँ के स्थानीय लोगों को भी एक संदेश मिलेगा कि ऋण लिया है तो उसे चुकाना भी जरूरी होता है।

साथियो, ऋण की वसूली आसानी से किया जा सकता है। बशर्ते कि हम थोड़ा जागरूक हों, दूरदर्शी हों। ऋण संबंधी खातों की निरंतर जांच करते रहें। जैसे ही संबंधित खाता अनर्जक आस्ति (एनपीए) में आना वाला हो तो किस्त का भुगतान करने के लिए उधारकर्ता को तुरंत सूचित करें। ऋण की वसूली के संबंध में आपको जहां कहीं भी अंचल कार्यालय की जरूरत महसूस हो तो आप निःसंकोच तुरंत सूचित करें हम आपकी सेवा में सदैव तत्पर हैं।

आनेवाली दो तिमाहियों में हमें विशेष रणनीति के तहत कुछ अलग करना होगा ताकि इस प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में मजबूती के साथ अपनी देवेदारी प्रस्तुत कर सकें। हमें ग्राहक सेवा की गुणवता में सुधार लाते हुए सभी ग्राहकों को डिजिटली सशक्त करना होगा। उन्हें मोबाइल बैंकिंग, एम पासबुक, यूको पे प्लस, एडीसी चैनलों आदि के माध्यम से जोड़ना होगा। अभी हाल ही में हमारे बैंक ने Uc@sh, डीजी लॉकर (digi locker) और यूको एम बैंकिंग प्लस जैसे डिजिटल उत्पादों का शुभारंभ किया गया जो बहुत ही तेज, आसान और सुरक्षित हैं। आज अधिकांश ग्राहक hi-tech होना चाहते हैं उन्हें कम समय में ज्यादा से ज्यादा और त्वरित सेवा चाहिए। हम उन्हें बेहतर से बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारी यह कोशिश हो कि हमारा कोई भी ग्राहक टूटे नहीं बल्कि ज्यादा से ज्यादा ग्राहक हमसे जुड़ता जाए। हमें पूरा विश्वास है कि हम सभी यूकोजन कुछ अनुपम व विशेष करने में सक्षम हैं और हम अपने मुकाम में जरूर कामयाब होंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(मनोज कुमार)
उप अंचल प्रमुख

राजभाषा में काम, राष्ट्र का सम्मान

संपादकीय

प्रिय मित्रो!

वहाँ तूफान भी हार जाते हैं, जहाँ कस्तियाँ ज़िद्द पर होती हैं।

जिंदगी में आगे बढ़कर कुछ विशेष करने का जज्बा ही मनुष्य को कामयाबी की राह पर ले जाती हैं। हमारे अंदर कुछ अलग और विशेष करने का जोशे जुनून होना चाहिए ताकि हम अपने राष्ट्र और समाज को उन्नति के राह पर ले चलें। हमारे अंदर एक विशाल संकल्प होना चाहिए और निरंतर ही उपपर चिंतन मनन करते रहना चाहिए ताकि हम अपनी मंजिल को आसानी से प्राप्त कर सकें।

जब हम कुछ अच्छा करने के लिए अपने अंदर से दृढ़संकल्पित हो जाते हैं तो चारों दिशाओं से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूरा का पूरा परिवेश हमारे से उस यज्ञ में अपनी ओर से कुछ न कुछ आहूति देने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। सकारात्मक परिवेश का निर्माण होने से हमारा दृढ़संकल्प सफल हो जाता है। किसी भी बेहतर सोच को धरातल पर लाने के लिए हमें उसपर निरंतर चिंतन-मनन करने की आवश्यकता होती है। राजभाषा कार्यान्वयन के साथ भी यही बात है। इस कार्य में मुश्किलें तो आती हैं परंतु सभी के सहयोग और सानिध्य से राजभाषा का कार्यान्वयन करना आसान हो जाता है। हमें हमेशा ही सभी दिशा में कार्य करते रहना चाहिए। अपने कार्यों को मुकाम तक पहुंचाने के लिए हमें जिद्दी भी होना होगा क्योंकि हम सभी दिशा में राष्ट्रहित के लिए कार्य करते हैं। बाधाओं, मुसीबतों और विघ्नों से डटकर मुक़ाबला करना चाहिए।

अगर हमें अपने व्यवसाय में वृद्धि करना है तो हमें वहाँ की आम जनता की भाषा को समझना होगा। चाहे वे क्षेत्रीय भाषाएँ या बोलियाँ हों और उसी भाषा के माध्यम से प्रचार-प्रसार भी करना चाहिए। लोकतंत्र का पर्व यानी चुनाव के दौरान अधिकांश नेता उस स्थान विशेष की भाषा में भी बात करते हैं और वह भाषा आम जनमानस की भाषा होती है। वहाँ शासन प्रशासन की भाषा बहुत कम उपयोग की जाती है।

मैं अपने अंचल कार्यालय, पटना के अंचल प्रमुख के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन को नई दिशा और गति प्रदान की है। उप महाप्रबंधक श्री दिलीप सिंह राठौड़ साहब के अनुमोदन व स्वीकृति से ही पटना अंचल कार्यालय द्वारा “ राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका” विषय पर दिनांक- 30 व 30 जुलाई, 2019 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक, नराकास, पटना, केंद्र सरकार और उद्यम के कार्यपालकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। मैं अपने अंचल के सभी स्टाफ सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता जताई।

इस प्रकार की संगोष्ठी बिहार राज्य के लिए गौरव की बात है। उक्त सेमिनार में भारत के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया और भारत के विशिष्ट वक्ताओं ने अपने विचार रखें। यह वास्तव में एक अनूठी और अनुपम संगोष्ठी रही जिसके लोगों में नई दिशा के साथ विशेष ज्ञानार्जन हुआ।

अगर हम राजभाषा हिंदी को कार्यान्वित करने का स्वप्न देखते हैं या कल्पना करते हैं तो हमें उसके अनुरूप कार्य करना होगा। उसे हकीकत में बदलने के लिए उसपर निरंतर चिंतन-मनन के साथ कार्य करते रहना होगा। मुसीबतें आएंगी, चली जाएंगी। लेकिन सफलता उसी को मिलती है जो चुनौतियों का डटकर मुकाबला करता है।

"लड़ाई लड़ने वाला ही विजय प्राप्त करता है, दूर से देखने वाला तो सिर्फ तालियां ही बजा सकता है।"

हमें भी मुश्किलों से डटकर मुक़ाबला करना चाहिए और मंजिल प्राप्ति हेतु हमेशा ही सकारात्मक सोच अपनाना चाहिए।

(डॉ. सुनील कुमार)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक द्वारा राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका

राष्ट्रीय संगोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ साथ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के डॉ ब्रजेश कुमार सिंह एवं डॉ शहजाद अहमद अंसारी एवं मंचासीन अतिथिगण

शब्दों को वैज्ञानिक व तकनीकी दृष्टिकोण से विशेष रूप से उसकी महता को बरकरार रखने और उचित,सुगम और सुग्राही रूप से उपयोग करने के उद्देश्य से दिनांक 30 व 31 जुलाई 2019 को बिहार राज्य की राजधानी पटना स्थित होटल यो चाइना में "राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका" विषय पर यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (30-31 जुलाई, 2019) का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मंचासीन यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, डॉ ब्रजेश कुमार सिंह व डॉ शाहजाद अहमद अंसारी,भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली प्रोफेसर बलराम तिवारी और उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार के कर-कमलों से दीप प्रज्वलित कर किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने सभी आंगतुकों, प्रतिभागियों, मीडिया कर्मियों और विशेष रूप से भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को धन्यवाद दिया कि उन्होने यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना को राष्ट्रीय सेमिनार के लिए पटना शहर में आयोजन के लिए अपना अनुमोदन दिया।

श्री राठौड़ ने आगे कहा कि ऐसे राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बिहार के लिए गौरव की बात है। वास्तव में बिहार सभ्यता, ज्ञान और शक्ति का केंद्र है जिसने अपनी समृद्ध राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा से पूरे विश्व को आलोकित किया है। विश्व में गणतंत्र की जन्मस्थली रही वैशाली जहां वज्जीसंघ के नेतृत्व में प्रथम गणराज्य की स्थापना हुई थी। बिहार शिक्षादाता रहा है। ज्ञान, शक्ति, राजनीति, शिष्टाचार, संस्कृति और सभ्यता के कारण ही बिहार अपने आप में गौरवमयी व महान है। यह वही जगह है जहाँ गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ।

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के सौजन्य से दिनांक- 30 व 31 जुलाई, 2019 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में बैंक, उपक्रम एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रोफेसर अवनीश कुमार को यूको बैंक का स्मृति चिह्न प्रस्तुत करते हुए अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़

उन्होंने आगे कहा कि दो दिनों तक शब्दों के उपयोग और सदुपयोग पर गहराई से विचार मंथन हो और उम्मीद करता हूँ कि इससे अमृत ही अमृत निकले ताकि पूरे राष्ट्र और विश्व का कल्याण हो। अच्छे शब्दों के आगमन और उपयोग से साहित्य, समाज, लेखनकला, कहानी आदि को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। जब हमारे मस्तिष्क में अच्छे शब्दों का किसी विषय वस्तु के लिए आगमन व गुंजन होता है तो साहित्य, कला, विज्ञान, कहानी आदि के लिए उचित शब्द आने लगते हैं और सभ्य व उचित शब्दों के माध्यम से हम समाज एवं राष्ट्र को अच्छे संस्कार भी देते हैं। जैसा कि कहा जाता है शब्द ही ब्रह्म है, शब्द आभूषण है, शब्द सम्प्रेषण का माध्यम है, शब्द अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। यह शब्द ही है जो समाज, राष्ट्र व विश्व को जोड़ता है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका भी अहम है। आज ज्यादातर हिंदी चैनल और समाचार पत्र उपलब्ध हैं जो सभी जनता के साथ संवाद स्थापित करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रचार हुआ है तो इसमें हिंदी सिनेमा की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज हमें ऐसी हिंदी की जरूरत है जिसे आम जनता आसानी से समझ सके।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा के बीच अंतर सिर्फ इतना है कि राजभाषा सिर्फ सरकारी कार्यालयों तक सीमित है जबकि राष्ट्रभाषा जन-जन की भाषा है। राष्ट्रभाषा पूरे उस देश के पूरे राष्ट्र की भाषा होती है। राजभाषा का कार्यान्वयन करना हम सभी का परम दायित्व है। आज भारत को ऐसी हिंदी की जरूरत है जिसे आम जनता आसानी से समझ सके।

इस संगोष्ठी में पटना शहर स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंक, उपक्रम एवं केंद्र सरकार के कार्यपालकों, राजभाषा अधिकारियों, राजभाषा संपर्क अधिकारियों, कर्मचारियों, विभिन्न राज्यों से पधारें राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग), नई दिल्ली के अध्यक्ष व निदेशक प्रोफेसर अवनीश कुमार ने कहा कि हिंदी के माध्यम से हम आम जनता की बातों को समझ सकते हैं और उनके साथ आसानी से संप्रेषणीयता स्थापित कर सकते हैं। आज हिंदी माध्यम से अनेकों पुस्तकें उपलब्ध हैं जिसका देश-विदेश में भी प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी को तकनीक के साथ जोड़कर इसे सरल और सुगम बनाया गया है। हिंदी भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानक और प्रमाणिक भाषा है। आयोग हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु अनुदान राशि भी प्रदान करता है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूचि में शामिल विभिन्न भाषाओं में कार्य किया जाता है। वहाँ के शब्दों को विशेष रूप से परिमार्जित कर शब्दकोश बनाए जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के संयुक्त सहयोग से आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से सरकारी क्षेत्र के विभिन्न कार्यालयों को लाभ हुआ है। इसके प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्य करने में सहायता मिलेगी। वास्तव में, भाषा के विकास के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, डॉ ब्रजेश कुमार सिंह, डॉ शहजाद अहमद अंसारी, मनोज कुमार (उप अंचल प्रमुख) , विजय कुमार यादव (मुख्य प्रबंधक,राजभाषा) एवं वीरेंद्र कुमार यादव

भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह ने कहा कि जब भाषा को विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़ा जाता है तो उसमें निरंतर निखार आती है और वह भाषा नई दुनिया के साथ चल पड़ती है। यह भाषा की महिमा है कि वह ज्यादा से

ज्यादा से लोगों के साथ सही रूप में संवाद स्थापित कर लोगों को लाभान्वित करती है। तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों पर विशेषज्ञों द्वारा काफी गहनता के साथ विचार-विमर्श करने के उपरांत ही उसे अनुमोदित किया जाता है।

डॉ. कुमार ने अपने आयोग की योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि आयोग की स्थापना भारत के संविधान के अनुच्छेद 344 के खंड (4) के उपबंधों के अधीन महामहिम राष्ट्रपति के 1960 के आदेश के द्वारा दिनांक 1 अक्तूबर 19610 को की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित सिद्धांतों का निरूपण करना है। आयोग द्वारा निर्मित या अनुमोदित की गई नई शब्दावली का प्रयोग करते हुए मानक वैज्ञानिक पाठ्य-पुस्तकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द-कोशों का निर्माण करना तथा विदेशी भाषाओं की वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में करना।

उन्होंने आगे कहा कि आयोग के साथ मिलकर हम यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा आज “राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका” राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहे हैं। इस संगोष्ठी में भारत के कई राज्यों से पधारे राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया है जिससे इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ी है। आयोग ने कई विषयों पर शब्दावली का निर्माण किया है जिससे अधिकांश लोग लाभान्वित हुए हैं।

उक्त आयोग के डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी ने कहा कि यूको बैंक द्वारा आयोजित यह संगोष्ठी शायद बिहार के लिए पहली ऐसी संगोष्ठी है जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैंक, उपक्रम और केंद्र सरकार के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। सही व प्रामाणिक शब्दों को सटीक जगह पर उपयोग करने से भाषा का विकास होता है। किसी भी शब्द को अगल-अलग संदर्भों में स्थितिनुसार व परिस्थितिनुसार उपयोग किए जाने उसका मतलब व अर्थ बदल जाता है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द ऐसे होते हैं जिसे सही रूप में उपयोग किया जाता है। अधिकांश शब्द आम जनता के बीच के बीच से आते हैं और मानकीकृत करने के लिए उसे विशेषज्ञों के बीच से गुजरना होता है तब ये शब्द सही अर्थों में हमारे शब्दावली में शामिल होते हैं।

उद्घाटन समारोह का धन्यवाद ज्ञापन यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि ऐसी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बिहार राज्य के लिए गौरव की बात है। इस हेतु वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में भी ऐसी संगोष्ठी का आयोजन किया जाता रहे ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग लाभान्वित हों। श्री कुमार ने विभिन्न कार्यालयों से पधारे प्रतिभागियों के कार्यालय प्रमुखों को प्रति भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने उन्हें प्रतिभाग करने की अनुमति प्रदान की। उक्त राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन समारोह का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

यूको बैंक द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी - प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में

हिन्दुस्तान

राजभाषा के शब्दों का खास योगदान

जागरण सिटी

राजभाषा में काम करना सरल

जागरण सिटी पटना

गतिविधियां

यूको बैंक ने आयोजित की राष्ट्रीय संगोष्ठी

पटना : यूको बैंक के अंचल कार्यालय की ओर से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में 30 एवं 31 जुलाई को पटना में 'राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें शब्दों की वैज्ञानिक व तकनीकी महत्ता को बरकरार रखने और सुगमता से उपयोग करने पर बल दिया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन यूको बैंक के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह एवं डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी ने किया। मौके पर यूको बैंक के प्रधान कार्यालय के हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य बीरेंद्र कुमार यादव व उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार

प्रभात खबर

तकनीकी शब्दावली पर हुई संगोष्ठी

पटना. राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली में आयोग की भूमिका विषय पर यूको बैंक, अंचल कार्यालय द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. उद्घाटन यूको बैंक, अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने किया. राठौड़ ने कहा कि ऐसे राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन गौरव की बात है. प्रोफेसर अवनीश कुमार ने कहा कि हिंदी के माध्यम से हम आम जनता की बातों को समझ सकते हैं और उनके साथ आसानी से संप्रेषणीयता स्थापित कर सकते हैं.

16 दैनिक जागरण

यूको बैंक ने आयोजित की राष्ट्रीय संगोष्ठी

पटना : यूको बैंक के अंचल कार्यालय की ओर से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में 30 एवं 31 जुलाई को पटना में 'राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें शब्दों की वैज्ञानिक व तकनीकी महत्ता को बरकरार रखने और सुगमता से उपयोग करने पर बल दिया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन यूको बैंक के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह एवं डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी ने किया। मौके पर यूको बैंक के प्रधान कार्यालय के हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य बीरेंद्र कुमार यादव व उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार

उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान

सेमिनार का आयोजन हुआ

दैनिक भास्कर

यूको बैंक की ओर से संगोष्ठी का आयोजन

पटना | यूको बैंक अंचल कार्यालय की ओर से राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वाधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन दिलीप सिंह राठौड, डॉ.ब्रजेश कुमार सिंह, डॉ.शाहजाद अहमद अंसारी, विजय कुमार यादव, बीरेन्द्र कुमार यादव, मनोज कुमार ने किया। अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने सभी आंगतुकों, प्रतिभागियों, मीडिया कर्मियों और विशेष रुप से भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को धन्यवाद दिया।

सभी कार्यों में सतर्कता बरतने से ही शांति संभव

शाखा प्रमुखों की बैठक का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री प्रदीप कुमार साथ में अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ और अन्य कार्यपालकगण।

चाहे हम यात्रा करते हों, या कार्यालय में कार्य करते हों, बाजार में हों या पार्टी या बैठक में या किसी से बातचीत करते हों या बैंकिंग लेनदेन करते हों या कोई व्यवसाय करते हों या किसी भी प्रकार के कार्य करते हों, हर क्षेत्र व कार्य में सतर्कता की नितांत अवश्यकता है। सावधानी और सतर्कता के साथ किया गया कार्य भविष्य के मार्ग को सुलभ और सुगम करता है।

आज अधिकांश बैंकर्स बैंक द्वारा जारी दिशानिर्देशों की अनदेखी कर जल्दी-जल्दी ऋण का संवितरण करते हैं ताकि उच्च कार्यालय द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को वे पूरा कर सकें और उन्हें बॉस की डाट नहीं सुननी पड़े। ऐसा पाया गया है कि सबंधित ऋण के लिए जरूरी दस्तावेज नहीं होने के बावजूद भी वे जोखिम भरे ऋण को भी अनुमोदित कर देते हैं ताकि उच्च कार्यालय की नजरों में उनकी स्थिति सम्मानजनक बनी रहे। मूलतः यह छानबीन के दौरान पाया

गया है कि अधिकांश बैंककर्मी द्वारा आधे-अधूरे कागजात के आधार या उनके करीबी रिश्तेदारों को बैंक के नियमों की अनदेखी करके को ऋण का संवितरण किया गया और इस हेतु उन्हें सजा भी दी गई। इससे संबंधित कर्मचारी के साथ-साथ संस्था का भी नुकसान होता है। हर कार्य को करते समय सतर्कता बरतनी चाहिए। यह संभव हो सकता है कि सभी कागजात व दस्तावेज़ की प्राप्ति में कुछ समय लग जाए परंतु कार्य बहुत ही सटीक होगा और भविष्य में किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी। किसी भी प्रकार का

पटना अंचल के शाखा प्रमुखों को सतर्कता के बारे में विशेष जानकारी देते हुए यूको बैंक के माननीय मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री प्रदीप कुमार

ऋण संवितरण करने से पहले सभी पहलूओं की गंभीरता से जाँच कर लेनी चाहिए।

उक्त बातें यूको बैंक के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री प्रदीप कुमार ने पटना के होटल यो चाइना में दिनांक- 18 अप्रैल, 2019 को आयोजित शाखा प्रमुखों की बैठक को संबोधित करते हुए कही।

उन्होने पी पी टी के माध्यम से बताया कि खासकर बैंकिंग लेनदेन करते समय विशेष रूप से सतर्कता बरतने की जरूरता है। किसी भी खाता का अंक बदल जाने या नहीं लिखने या ज्यादा लिख देने से संस्था और कर्मचारी दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सतर्कता ही आज के लिए बचाव है और सही तरीके से किया गया कार्य भविष्य निर्माण के लिए उचित है। आज विभिन्न तरीकों से बैंकिंग में कपट नित नई घटनाएँ घटित हो रही हैं। फोन कॉल के माध्यम से लेनदेन के क्षेत्र में अनजान लोगों के साथ कपट की घटनाएँ घटित हो रही हैं। बार-बार एसएमएस अलर्ट के माध्यम से सूचित किए जाने के बावजूद भी लोग लॉटरी जैसी घटनाओं के चंगुल में फंस जा रहे हैं। बिना मेहनत किए जल्दी से पैसा कमाने की

चक्कर में वे खुद अपनी ही मेहनत की कमाई को चंद मिनटों में गंवा देते हैं।

सभा को संबोधित करते हुए उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि जिंदगी के हर मोड पर हमें काफी सतर्कता के साथ कार्य करना चाहिए और हमें हर कार्य को पूर्ण निष्पक्षता के साथ करना चाहिए। किसी को ऋण प्रदान करने से पहले ही सभी चीजों की बारीकी से जांच पड़ताल कर लेनी चाहिए। शुरुआती दौर में की गई तहक़ीक़ात ही भविष्य के मार्ग को सुलभ बनाती है। आज हर कोई किसी भी विषयवस्तु को लेकर सतर्कता के साथ अपनी बातों को रखता है।

उक्त सभा का धन्यवाद ज्ञापन उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने किया और कहा कि सतर्कता के बगैर कोई भी कार्य भविष्य के लिए सुलभ और सुगम नहीं हो सकता है। आज की तारीख में सभी को हर चीजें जल्दी और आसानी से प्राप्त होनी चाहिए परंतु लोग थोड़ी सी चूक की वजह से भविष्य के लिए मुसीबत मोल लेते हैं।

बेहतर कार्यनिष्पादन हेतु पटना अंचल के स्टाफ सदस्य सम्मानित

माननीय मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री प्रदीप कुमार और उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ के कर-कमलों से पटना अंचलाधीन विभिन्न शाखा प्रमुखों को बेहतरीन कार्यनिष्पादन के लिए पुरस्कृत किया गया।

वसूली, वसूली सिर्फ और सिर्फ वसूली.....

मनोज कुमार,उप अंचल प्रमुख

आजकल बैंकिंग जगत में करने वाले हों या समाज के अन्य लोग वे सभी एनपीए शब्द को समझने लगे हैं। भारतीय बैंकिंग को एनपीए एक दीमक की तरह चाट रहा है। क्या बड़े क्या छोटे सभी बैंक इससे परेशान हैं। वित्तीय अनुशासन कई कारणों से खराब हो रहा है।

हमारा बैंक, ऑपरेटिंग लाभ करने के बावजूद, विभिन्न प्रावधान (प्रोविज़न) करने के कारण निवल (नेट) हानि में है और प्रावधान (प्रोविज़न) का सबसे बड़ा हिस्सा एनपीए के प्रोविज़न से ही जाता है। दिनांक -30.06.2019 की स्थिति के अनुसार आज हमारा बैंक का सकल एनपीए (gross NPA) 24.85% तथा निवल एनपीए (Net NPA) 8.99% है जो कि अन्य बैंकों की तुलना में सबसे अधिक है। हालांकि प्रावधान (प्रोविज़न) कवरेज अनुपात (रेसियों) वर्ष दर वर्ष 77.12% है। हमारे बैंक ने संकल्प 2020 के लक्ष्य को लेकर चला ताकि ज्यादा से ज्यादा निवल लाभ (नेट प्रॉफ़िट) प्राप्त कर पीसीए (PCA) से बाहर निकालकर बैंक को ऊँचाई पर पहुंचा सके।

संकल्प-2020 के अंतर्गत प्रत्येक तिमाही में रु. 2000 करोड़ की वसूली करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए विभिन्न कार्यक्रम जैसे- "मिशन निराकरण", "मिशन लक्ष्य", "उड़ान" आदि आयोजित किए गए हैं। अभी हाल ही में बैंक ने एनडीएनडी/ NDND (Non- discretionary and Non-discriminatory) अर्थात गैर-विवेकाधीन और गैर-भेदभावपूर्ण योजना की शुरुआत की है। जिसके तहत कर्जदारों को निदेशक मण्डल द्वारा पहले से ही तय रकम पर ऋण समझौता कर दिया गया है जिसमें कर्जदारों को शुरू में 10% एवं बाकी रकम सिर्फ एक महीने के अंदर संबंधित राशि को चुका देना होगा। यह योजना एक सराहनीय प्रयास के तौर पर उभरकर आई है। हमारे बैंक ने पूरे वर्ष सिर्फ वसूली-वसूली पर ही विशेष ध्यान देने का निर्णय किया है। वसूली को धारदार बनाने के लिए विभिन्न सुझाव दिए जा रहे हैं जो निम्नलिखित हैं:-

1. <u>कर्जदारों तक पहुँच</u>:- बैंक को अपने कर्जदारों तक पहुंचाना होगा। शाखा के कर्मचारी/ प्रबंधक या तो खुद या EA (प्रवर्तन एजेंट / Enforcement Agent), RA (वसूली एजेंट / Recovery Agent) या BC (व्यावसाय संवाददाता Business Correspondent) के माध्यम से पहुँच सकते हैं जिससे कि वे उधारकर्ताओं से संवाद कायम कर सकें ताकि कर्जमाफ़ी की विभिन्न योजनाओं से उन्हें लाभ मिल सके। इसमें शाखा में कार्य कर रहे पुराने सब-स्टाफ सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। वसूली हेतु गाँवों में कैंप मोड में भी कार्य किया जा सकता है। माइकिंग (Miking) करना सबसे अच्छा साधन है, जिससे कर्जदार बैंक की ओर आ सकते हैं और अपना कर्ज का निपटान कर सकते हैं।

2. <u>"माओ / MAO- एक के खिलाफ अनेक (Many Against One)</u>":- अर्थात गांधीगिरी की तर्ज पर विभिन्न वाक्यों के साथ वसूली संबंधित नारे के तौर पर आप लिख सकते हैं – बैंक का कर्ज चुकता कर जीवनभर की शांति का आनंद लें", "बैंक द्वारा आपको दिया गया पैसा आम जनता का पैसा है, इसे तुरंत चुकता करें", "आप अपने ऋण क त्वरित भुगतान करें ताकि अन्य जरूरतमंदों को भी ऋण दिया जा सके", "अपने पुराने ऋण को चुकता कर देश की तरक्की व विकास में योगदान करें" आदि। अगर एक के खिलाफ अनेक (माओ) के तहत प्रदर्शन करते हैं तो संबंधित उधारकर्ता के आसपास/पड़ोस के लोगों को लगेगा कि अमूक व्यक्ति या संबंधित कंपनी के मालिक ने बैंक से ऋण लिया है और अभीतक उसका भुगतान नहीं किया है। इससे वहाँ के स्थानीय लोगों को भी एक संदेश मिलेगा कि ऋण लिया है तो उसे चुकाना भी जरूरी होता है। इस अभियान से बहुत

सारे उधारकर्ता सामाजिक प्रतिष्ठा व लोक लिहाज से बैंक के ऋण को चुकाने के लिए बाध्य हो जाएंगे।

3. कानूनी कार्रवाई (Legal Action):- अपने कर्जदारों से बैंक की राशि (रकम) वसूल करने में यह सबसे कारगर उपाय है। इसमें कानूनी सूचना (Legal Notice) से लेकर मुकदमा दायर करना (Suit filed), डीआरटी मामले (DRT Cases), प्रमाणपत्र मामले (Certificate Cases), परक्राम्य लिखत अधिनियम (NI Act) आदि के अधीन शिकायत दर्ज कर कर्जदारों पर दबाव बनाकर बकाए राशि की वसूली की जा सकती है। इसके लिए बैंकों को अच्छे वकीलों (Advocates) को सूचीबद्ध (Empanelment) करना आवश्यक है जो कि कानूनी कार्रवाई (Legal Action) में मददगार साबित हो सकें।

4. सरफेसी अधिनियम (SARFAESI Act) / प्रधान कार्यालय की जब्ती नीति HO Seizure Policy :- जहाँ अंचल संपत्ति बंधक है वहाँ SARFAESI Act के तहत कार्रवाई की जा सकती है। इस नीति की धारा (सेक्शन) 13 (2) के तहत कर्जदार (उधारकर्ता) को बकाया राशि का भुगतान करने हेतु 60 दिनों का समय दिया जाता है और अगर इस अवधि के दौरान वह कर्ज नहीं चुकाता है तो उसे फिर धारा (सेक्शन) 13 (4) के तहत संबंधित बंधक संपत्ति पर (अधिकृत अधिकारियों द्वारा) नोटिस लगाकर भौतिक कब्जा (Physical Possession) / प्रतिकात्मक जब्ती (symbolic possession) कर लिया जाता है।

उक्त कार्रवाई के बाद संबंधित संपत्ति को बैंक के सूचीबद्ध मूल्य-निर्धारक (empanelled valuer) द्वारा मूल्यांकन (valuation) करा कर आरक्षित मूल्य निर्धारित (Reserve Price Fixed) होने के उपरांत उसे नीलामी (Auction) के लिए समाचार पत्र में प्रकाशित किया जाता है। इच्छुक खरीदार बैंक के नियमानुसार वित्तीय बोली लगाकर उसे खरीद सकते हैं और इस माध्यम से बैंक द्वारा प्रदान किया ऋण वसूल किया जा सकता है। वसूली के लिए यह सबसे अच्छा साधन है। कई बार खाता कब्जा (Possession) लेने के बाद बंद हो जाता है। इसमें खास बात यह है कि SARFAESI Action को बैंक के अधिकृत अधिकारी ही ले सकते हैं जो कि Scale-IV या उससे ऊपर के अधिकारी होते हैं।

कमर्शियल वेहिकल एवं कार लोन (Commercial Vehicle and Car Loan) के एनपीए खातों की वसूली के लिए हमारे बैंक ने जब्ती / कब्जा नीति (Seizure Policy) बनाया है। जिसके अधीन त्वरित कार्रवाई करते हुए वाहन (vehicle) को जब्त कर नीलामी की जा सकती है और एनपीए (NPA) रकम की वसूली की जा सकती है।

5. समझौता (Compromise) :- बैंक अपने ग्राहकों से कर्ज वसूली के लिए विभिन्न समझौता प्रस्ताव भी लाया है। जिसके तहत कर्जदारों को कुछ या ज्यादा रकम (राशि) की माफी मिल जाती है। यह हमारे बैंक में काफी लोकप्रिय है। साथ में लोक अदालत छोटे कर्जदारों के लिए कर्ज से मुक्त होने में काफी अहम भूमिका अदा करता है। संशोधित योजना (Modified Scheme) I व II और IAA योजना है जिसके तहत हर वर्ग के कर्जदारों के लिए योजना है जो कुछ छूट का लाभ उठाकर अपने ऋण खातों को बंद करवा सकते हैं। इसे और सरल बनाने के लिए एक बार दर्ज करने की प्रणाली (Single Sign On) बनाई गई है जिससे शाखा को समझौता प्रस्ताव बनाने में आसानी हो सकती है।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि किसी भी ग्राहक को ऋण देने से पहले प्राथमिक स्तर पर ही बैंक द्वारा सभी तथ्यों व कथ्यों की पूर्णतः जाँच कर ली जाए ताकि ऋण संबंधी कोई भी खाता एनपीए (NPA) नहीं हो। इसके लिए सही ग्राहकों की पहचान, यथोचित परिश्रम (due diligence), अच्छी निगरानी (Tight Monitoring) एवं बैंक द्वारा जारी दिशानिर्देशों का सही मायने में पालन किया जाए ताकि ऋण खाता क्रियाशील (Performing) बनी रहे। अगर किसी भी ऋण खाता का एनपीए होने का सूचक / अंदेशा लग रहा हो तो उसपर त्वरित कार्रवाई करते हुए उस खाते को पुनर्गठन (restructure) किया जा सकता है। हमें सारे विकल्पों पर अमल करना चाहिए ताकि खाता एनपीए (NPA) नहीं हो। यदि खाता किसी कारण से एनपीए हो जाता है तो उपर्युक्त में वर्णित उपायो से ऋण वसूली किया जा सकता है।

शाखा प्रमुखों के लिए राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कहा जाता है कि राजभाषा का कार्यान्वयन मुख्य रूप से प्रशासनिक प्रमुखों, कार्यपालकों और अधिकारियों के सशक्त निर्णय के माध्यम से ही किया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के शाखा प्रमुखों के लिए दिनांक- 18 अप्रैल, 2019 को होटल यो चाइना में उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सभी को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री राठौड़ ने कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन करना हम सभी का परमदायित्व है। खासकर शाखा प्रमुखों या प्रशासनिक प्रमुखों का दायित्व और भी बढ़ जाता है जब वे अपनी शाखा के प्रमुख की भूमिका में होते हैं। भारत सरकार की अपेक्षाओं को हमें भरसक पूरा करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान में सभी व्यवसाय पूर्ण रूप से बेहतर ग्राहक सेवा पर ही आधारित हैं। अगर ग्राहक हमारी सेवा से संतुष्ट है तो हमारा व्यवसाय निश्चित रूप से अग्रसर होता रहेगा और ग्राहक ही हमारी व्यवसाय वृद्धि के लिए अग्रणी की भूमिका में रहेंगे। ग्राहकों को उनकी भाषा में वार्तालाप करके उन्हें बेहतर से बेहतर सेवा दी जाए।

शाखा प्रमुखों के लिए सत्र का संचालन करते हुए अंचल कार्यालय, पटना ममें पदस्थापित डॉ सुनील कुमार ने बताया की तिमाही प्रगति रिपोर्ट को भरते समय कौन-कौन से सावधानियाँ बरतनी चाहिए और सही तरीके से रिपोर्ट को कैसे भरा जाए। उन्होंने यह भी बताया कि टेक्स्ट टू स्पीच यानि मोबाइल में बोलकर हिंदी में कैसे टाइप किया जाए, शाखाओं में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुगमता और सरलता से कैसे किया जाए। उक्त कार्यशाला में सभी शाखा प्रमुखों को कुछ विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया और सभी इसके लाभान्वित हुएँ।

उपस्थित शाखा प्रमुखों ने राजभाषा हिंदी कार्यशाला को बहुत सराहा और अपनी प्रतिपुष्टि में कहा कि यह कार्यशाला राजभाषा हिंदी को पूर्ण रूप से तकनीक के साथ जोडकर बताया गया जो बहुत ही सराहनीय पहल है।

चल-चल वसूली कर !

ग्राहक को कर्ज दें खाते को देख भाल कर
नियमित पैसा न आए तो एनपीए कर
चल- चल वसूली कर !

कर्ज देने में घबराना मत
एनपीए होने देना मत
फिर भी अगर हो जाए तो
चल- चल वसूली कर!

मदद ले स्टाफ का, वसूली एजेंट का
साथ में बी सी एजेंट का
जरूरत पड़े तो संपत्ति की नीलामी कर
चल- चल वसूली कर!

एनपीए खाते में केस कर, डीआरटी कर,
न हो तो लोक अदालत में कर्ज माफ कर,
अपने अधिकार में न आए तो समझौता
प्रस्ताव
ऊपर भेजकर कर माफ कर
चल-चल वसूली कर!

मनोज कुमार, उप अंचल प्रमुख
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना

कर्ज दे ग्राहक को देखभाल कर
खाता एनपीए हो जाए तो
वसूली का उपाय कर
यही बैंकिंग की प्रणाली है।
चल-चल वसूली कर!

अपनी भाषा, अपना देश, देता है गौरव का संदेश

("देश की भाषा, देश की धड़कन" - यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना ने किया हिंदी माह-2019 का आगाज)

सभा को संबोधित करते हुए उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, (दायी ओर से) उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार, सहायक महाप्रबंधक, क्षेत्र निरीक्षणालय, पटना श्री मनोज कुमार, मुख्य प्रबंधक श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव और मुख्य प्रबंधक (रिटेल) सुश्री वीणा तिवारी।

भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है। किसी भी देश के लिए देश की भाषा ही उसकी धड़कन होती है। अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बहुत ही आसान है। हम जो बोलते हैं वही लिखते हैं और जो लिखते हैं वही बोलते हैं। यह हिंदी की अपनी सरलता और वैज्ञानिकता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहजता, सरलता और सुगमता से की जा सकती है। आज हमें हिंदी को सरलतम रूप में अपनाने की आवश्यकता है। हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। आज भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी भाषा से ही भारतीय संस्कृति की अविरल धारा जीवंत तथा सुरक्षित है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के बीच जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। अपनी भाषा और अपना देश ही गौरव का संदेश देता है। उक्त बातें यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने हिंदी माह समारोह की सभा को संबोधित करते हुए अंचल कार्यालय, पटना और क्षेत्र निरीक्षणालय, पटना के सभी यूकोजन के समक्ष कहा। उक्त समारोह का आगाज दीप प्रज्वलित कर किया गया।

अंचल प्रमुख श्री दिलीप राठौड़ ने यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा – तस्वीर की बात, अधूरी कहानी, आशुभाषण, सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन और वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सदस्यों द्वारा किए गए बेहतर कार्य के लिए सराहना की। उन्होंने कहा की यूको बैंक ने हाल ही में पटना में राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार का आयोजन कराया जिसमें विभिन्न राज्यों एवं पटना स्थित तीनों नराकास के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उक्त सभा को संबोधित करते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि हर किसी को अपनी भाषा प्यारी होती है। वर्तमान में हिंदी की पहचान एक विश्व पटल पर छायी हुई है। आज बाजारवाद की दुनिया में भाषा बहुत ज्यादा मायने रखती है। भाषा का बाजार में विराजमान होना जरूरी है। आज वही भाषा चलती और विकसित होती है जिसे बाजार अपना लेता है। आज की हिंदी अधिकांश भारतीयों की जुबां पर है। आज अधिकांश प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भाषा हिंदी हो चुकी है। अन्य

उपस्थित स्टाफ सदस्यों को राजभाषा प्रतिज्ञा का शपथ दिलाते हुए उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़

भाषाओं की फिल्मों को हिंदी में डबिंग कर दिखाया जाता है और हिंदी भाषा से उन फिल्मों को अधिकांश मुनाफा हो रहा है। एक राष्ट्र के लिए एक भाषा का भी होना जरूरी है। जिससे कि विश्व स्तर पर हमारी पहचान बन सके।

अंचल कार्यालय के राजभाषा अधिकारी डॉ सुनील कुमार ने कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन करना हम सभी की जिम्मेवारी बनती है। हमें अपने राष्ट्र और राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए। सिर्फ हिंदी ही नहीं बल्कि भारत की अन्य भारतीय भाषाओं का भी पूर्ण रूप से सम्मान होना चाहिए जो हमारी भारतीय संविधान की 8वीं अनूसूची में शामिल हैं। हिंदी दिवस भारतीय भाषा सौहार्द दिवस के रूप में भी मनाया जाए ताकि सभी भाषाओं का समान रूप से आदर सम्मान मिल सके।

उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन मुख्य रूप से कार्यापालकों के द्वारा ही किया जा सकता है क्योंकि उनके पास किसी भी कार्य को सशक्त रूप से कार्यान्वित करने और कराने की क्षमता होती है। मुख्यतः ऐसा पाया गया है कि कार्यपालकों को पूर्ण रूप से प्रशासनिक शक्ति प्रदान की गई हैं जिससे वे अपने नीचले तबके के अधिकारियों और कर्मचारियों को आदेश जारी कर सकते हैं और राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु कठोर कार्रवाई भी कर सकते हैं। उनके द्वारा उठाए गए कदम सभी के लिए प्रेरणादायी भी हो सकता है। जब हमारे देश का झण्डा एक है, हमारे देश का संविधान एक है, एक संसद भवन है, एक उच्चतम न्यायालय है, एक राष्ट्रगान है तो हमारे देश में भी एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। इस हेतु सभी की भूमिका बराबर की होनी चाहिए आदेश देनेवाले और आदेशों का अनुपालन करने वालों के बीच एक ऐसी संवाद स्थापित करने की अवश्यकता है जिसके माध्यम से राजभाषा का कार्यान्वयन करना सुगम और सुग्राही हो जाए।

राजभाषा प्रतिज्ञा के अधीन राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए शपथ ग्रहण करते हुए यूको बैंक के स्टाफ सदस्यगण

हिंदी दिवस सिर्फ एक दिन के लिए नहीं मनाई जाए बल्कि यह हर दिन मनाया जाए यानि हम सभी प्रत्येक दिन राजभाषा हिंदी में कार्य करें ताकि राजभाषा हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा बन सकें। इसके लिए हमें संकल्प लेना होगा कि हम हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा जल्द से जल्द बनाएँ। अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ अपने-अपने राज्यों में कार्यरत रहें और जैसा कि संविधान में वर्णित है कि हिंदी संघ की राजभाषा होगी और अन्य राज्यों में वहाँ के प्रशासनिक कामकाज उस राज्य की क्षेत्रीय भाषा में किया जाए।

हिंदी माह के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस 2019 के अवसर पर प्रेषहीत संदेश का वाचन यूको बैंक क्षेत्र निरीक्षणालय। पटना के सहायक महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार ने किया और यूको बैंक के प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के हिंदी दिवस 2019 ले संदेश का वाचन मुख्य प्रबंधक श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव ने किया।

उक्त सभा का धन्यवाद ज्ञापन पटना अंचल कार्यालय के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने किया और कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन के लिए हम सभी को आगे आना चाहिए। हमें अपने दैनंदिन कार्यों को हिंदी में करना चाहिए।

हिंदी माह 2019 का आगाज – प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में

अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान

पटना. हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है. किसी भी देश के लिए देश की भाषा ही उसकी धड़कन होती है. अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है. ये बातें यूको बैंक के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने शुक्रवार को हिंदी माह समारोह की सभा को संबोधित करते हुए कहीं. उन्होंने कहा कि हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है. हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बहुत ही आसान है. उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि हर किसी को अपनी भाषा प्यारी होती है.

यूको बैंक के अंचल कार्यालय में कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

हिंदी में काम करना राष्ट्र का सम्मान

पटना। हिंदी में काम करना राष्ट्र का सम्मान है। यह बातें यूको बैंक के अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने कही। वे अंचल कार्यालय में हिंदी माह समारोह को संबोधित कर रहे थे। अंचल प्रमुख ने यूको बैंक की ओर से प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया। साथ ही वित्तीय वर्ष में हिंदी में बेहतर कार्य करने वाले सदस्यों का सम्मान भी हुआ। बैंक के उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि अभी हिंदी की पहचान विश्व पटल पर छाई हुई है। शंभूनाथ श्रीवास्तव ने बैंक के एमडीके हिंदी दिवस संदेश का वाचन किया। रिटेल की मुख्य प्रबंधक वीणा तिवारी भी रही।

यूको बैंक में हिंदी माह समारोह का आयोजन

पटना। यूको बैंक के पटना अंचल कार्यालय में हिंदी माह समारोह का आयोजन हुआ। उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौर ने हिन्दी की महत्ता पर विचार रखे। विभिन्न प्रतियोगिताओं तस्वीर की बात, अधूरी कहानी, आशुभाषण, सुलेख प्रतियोगिता के आयोजन और वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सदस्यों के बेहतर कार्य के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि यूको बैंक ने हाल ही में पटना में राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार का आयोजन कराया। जिसमें विभिन्न राज्यों एवं पटना के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

यूको बैंक में हिंदी माह का आगाज

पटना। हिंदी देश की सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। किसी भी देश के लिए उसकी धड़कन उस देश की भाषा होती है। हिंदी उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है।

आज हिंदी को सरलतम रूप में अपनाने की जरूरत है। ये बातें यूको बैंक अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने हिंदी माह समारोह को संबोधित करते हुए कहीं। अंचल प्रमुख ने अंचल कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं तस्वीर की बात, अधूरी कहानी, आशुभाषण, सुलेख प्रतियोगिता सहित पूरे वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सदस्यों द्वारा किये गए बेहतर कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि बैंक ने हाल में पटना में राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार का आयोजन कराया जिसमें विभिन्न राज्यों एवं पटना स्थित तीनों नराकास के प्रतिभागियों ने भाग लिया। उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि सबको अपनी भाषा प्यारी होती है। आज बाजारवाद की दुनिया में भाषा ज्यादा मायने रखती है। मौके पर बड़ी संख्या में बैंककर्मी उपस्थित थे।

विचारों का सृजन तथा परामर्श हेतु शाखा स्तरीय अभियान कार्यक्रम

विचारों के सृजन तथा परामर्श हेतु शाखा स्तरीय अभियान के तहत शाखा प्रमुखों की बैठक को संबोधित करते हुए यूको बैंक के महाप्रबंधक श्री मनीष कुमार साथ में उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ एवं अन्य कार्यपालकगण।

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग के आदेशानुसार भारत सरकार की अग्रणी बैंकों में एक यूको बैंक ने दिनांक 17 व 18 अगस्त 2019 को पटना के होटल यो चाइना में अपने पटना अंचलाधीन सभी शाखाओं के शाखा प्रमुखों के लिए विचारों का सृजन तथा परामर्श हेतु शाखा स्तरीय अभियान के तहत दो दिवसीय बैठक का आयोजन यूको बैंक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता के महाप्रबंधक श्री मनीष कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

सभा को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक श्री मनीष कुमार ने भारत सरकार, वित्त मंत्रालय द्वारा जारी परिपत्र के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए शाखा प्रमुखों को बताया कि किस प्रकार से डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा दिया जा सकता है। सरकारी बैंकों में निगम नियंत्रण, भारत के एमएसएमई हेतु ऋण, सरकारी बैंकों में तकनीक का उपयोग, खुदरा ऋण- एक सुनहरा अवसर, कृषि ऋण, भारत में निर्यात ऋण- चुनौतियां व नीति विकल्प, वित्तीय ग्रिड स्थापित करने की अवश्यकता–पीएमजेडीवाई को आगे बढ़ाना और 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए बैंक ऋण हेतु सक्षम करना।

इसके आगे महाप्रबंधक श्री कुमार ने बताया कि विभिन्न मानदंडों के तहत राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ बैंकिंग जगत की रूपरेखा निर्धारित की जाएगी। आज बैंकिंग क्षेत्र में वैचारिक मंथन की आवश्यकता है। हमें आर्थिक और मूलभूत सुविधा में वृद्धि हेतु ऋण सहायता प्रदान करनी होगी। किसानों की आय को दुगुनी करनी होगी। जल शक्ति, ग्रीन इकॉनमी हेतु मदद, सभी के लिए आवास, स्वच्छ भारत, महिला सशक्तिकरण, एमएसएमई / मुद्रा, स्टैंड-अप-इंडिया, शिक्षा ऋण, ब्लू इकॉनमी, निर्यात ऋण, डिजिटल इकॉनमी, तकनीक, वित्तीय समावेशन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, इज ऑफ लिविंग, स्थानीय प्राथमिकताओं के संरेखण, कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारियाँ (कॉर्पोरेट सोशल रिपोन्सिबिलिटी) आदि मुद्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कहा कि तीन चरणों की पहली बैठक का आयोजन 17 व 18 अगस्त को किया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ बैंकिंग को संरेखित करना, विचारों के सृजन तथा परामर्श करना और शाखा प्रमुखों की ओर से आए विचारों एवं सुझावों को एकत्रित व समेकित करके उसे दूसरे चरण के राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक में दिनांक 22 और 23 अगस्त को प्रस्तुत किया जाएगा। इसी क्रम में तीसरे व अंतिम चरण की बैठक दो दिनों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नई दिल्ली में आयोजित की जाएगी।

उक्त बैठक में उपस्थित पटना अंचल के सभी शाखाओं से पधारे शाखा प्रमुख।

हिन्दुस्तान

www.livehindustan.com

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

कामकाज | आज का दिन 1908 : पद्म भूषण से सम्मानित हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक अब्दुल राशिद खान का जन्म हुआ। | हिन्दु

सभी बैंकों का डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने पर जोर

समीक्षा बैठक

राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

यूको बैंक के शाखा प्रमुखों की हुई बैठक

दैनिक भास्कर

जागरण सिटी

सन्मार्ग

यूको बैंक, अंचल पटना को नराकास का पुरस्कार

भारत सरकार की अग्रणी बैंकों में एक यूको बैंक को वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के लिए बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पटना की ओर से यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने राजभाषा शील्ड ग्रहण किया।

उक्त छमाही बैठक का आयोजन पटना के होटल चाणक्य में दिनांक- 28 अगस्त, 2019 को आयोजित किया गया। यह पुरस्कार भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग (पूर्वी क्षेत्र) के सहायक निदेशक श्री निर्मल कुमार दुबे एवं बैठक ई अध्यक्षता कर रहे भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री निर्मल कुमार दुबे ने यूको बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में की जा रही नित-नई गतिविधियों की काफी सराहना की और कहा कि अन्य बैंकों को भी यूको बैंक की तरह कुछ विशेष करना चाहिए ताकि राजभाषा का निरंतर विकास होता रहे। उन्होंने कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन अगर किसी क्षेत्र में हुआ है तो वह मुख्य रूप से बैंकिंग उद्योग में हुआ है। बैंकिंग का कार्य मुख्यतः ग्राहकों के साथ होने की वजह से बैंकिंग जगत ने ग्राहकों की भाषा में कार्य किया है और इस माध्यम से अपने व्यवसाय में भी उतरोत्तर वृद्धि की है। आज ज्यादातर बैंकिंग सुविधाएं ग्राहकों के साथ जुड़ी हुयी हैं और बैंकों ने ग्राहकों के हित को ध्यान में रखकर ही अधिकांश कार्य किया है। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि वित्तीय वर्ष के दौरान अधिकांश बैंकों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कराकर अन्य कर्मचारियों को भी राजभाषा कार्यों के प्रति जिज्ञासा जगाया है।

श्री दुबे ने बैंकों के उल्लेखनीय कार्यों की सराहना करते हुए यह स्पष्ट किया कि हम बैंकर्स राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति विशेष रूप से सजग व जागरूक हैं।

भारत सरकार , गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री निर्मल कुमार दुबे और भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक के कर- कमलों से बैंक, नराकास पटना का पुरस्कार ग्रहण करते हुए उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़

निरीक्षणोपरांत ऐसा पाया गया है कि बैंकिंग जगत से जुड़े कर्मचारीगण अपने कार्यों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं और अपनी भारत सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने हेतु कृतसंकल्प हैं।

पुरस्कार प्राप्ति के बाद अंचल कार्यालय, पटना स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि पटना अंचल को राजभाषा का शील्ड मिलना हम सभी के लिए गौरव की बात है। अंचल कार्यालय, पटना के अधीन आनेवाली सभी शाखाओं ने अपनी राजभाषा कार्यान्वयन को गति देने की पूर्ण कोशिश की है। विशेषकर पटना अंचल कार्यालय के अधिकांश विभागों ने अधिक से अधिक हिन्दी पत्राचार किया है और अच्छी बात यह है कि अँग्रेजी के पत्रों का जवाब ही हिंदी में दिया जाता है। कुछ विभागों ने शत प्रतिशत कार्य हिंदी में किया है जो साधुवाद के पात्र हैं। इस पुरस्कार का श्रेय व सम्मान अंचल के सभी स्टाफ सदस्यों को जाता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन करना हम सभी का परमदायित्व है। उन्होंने कहा कि जनमानस की भाषा के साथ जुडकार ही हम अपनी बातों को उन तक पहुंचा सकते हैं।

“हारी मैं हारी”

उलझ गयी है साँस भी जल रहा है बदन

आँखों से लहू है बह रहा तप रहा है मन

कितनी चीखें कितनी कोशिश करके भी हारी

सब जतन कर लिया फिर भी मैं हारी

हारी मैं हारी हारी अपनी लज्जा से हारी हारी मैं हारी।

लहू में जो गर्मी थी साँसों में जो नरमी थी

चेहरे पर जो मुस्कुराहट थी सब छीन लिया तूने

कोमल सा मन मेरा आँखों में पलते सपने सब तोड़ दिए तूने

यौवन को मेरे कुचला ऐसे जैसे कोई बात न थी

हारी मैं हारी हारी अपनी लज्जा से हारी हारी मैं हारी।

कैसे छीना आँचल तूने मेरा कैसे उतारी मेरी लज्जा

कैसे जिस्म को मेरे करते हो छलनी मानो कोई लाश से खेले

कैसे मेरी चीख़ों और आँसू पर हँसते हो मानो कोई बात नहीं है।

कैसे भूलूँ दर्द ये जो मेरी आत्मा को अंदर अंदर चीड़ रहा है।

हारी मैं हारी हारी अपनी लज्जा से हारी हारी मैं हारी।

जिस्म पर मेरे ज़ख़म हैं गहरे कैसे छुपाऊँ किसको दिखाऊँ

दाग़ जो तूने मेरे दमन पर है लगाया आत्मा को मेरी घायल बनाया।

नीर भी अब मेरे सूख गए हैं आँखें भी हैं पथराई,

कितनी सदाएँ दीं तुमको न जाने किन किन की दुहाई।

हारी मैं हारी हारी अपनी लज्जा से हारी हारी मैं हारी।

तुमहारे कारण छोटे वस्त्र न पहने हम न निकलें देर रात रातों को

लोगों की नज़रों से बच कर हर कदम फूँक कर रखना पड़ता हमको

कैसी विडम्बना है इस संसार की मेरी कोख में पलती सृष्टि सारी

फिर भी इस जगत में कोई करता नहीं कदर हमारी

हारी मैं हारी हारी अपनी लज्जा से हारी हारी मैं हारी।

देवी को पूजने वाले इस देश में अपनी माँ बेटी ही नहीं सुरक्षित

नर के लिए नारी बस एक पिंजर जैसी न कोई पीड़ा न नीर

सबके मन की सुनने वाली औरत ही जब नहीं होगी खुश

करो नारी का सम्मान मंदिर मस्जिद में मत खोजो अल्लाह और भगवान

फिर न मैं हारूँगी न अपनी लज्जा न अपना मान सम्मान।

ईश्वर ने हम दोनों को बनाया एक समान

तुम से हम हैं हम से तुम हो

कोई छोटा न कोई बड़ा दोनों का महत्व एक समान

करो नारी का सम्मान तभी खुश होंगे अल्लाह और भगवान।

फिर न मैं हारूँगी न अपनी लज्जा न अपना मान सम्मान।

नाम:- साजदा प्रवीण
कर्मचारी संख्या :- 53317
शाखा :- यूको बैंक ,खगौल (2135)
मोबाइल नंबर :- 8252539069

69वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की 69वीं त्रैमासिक बैठक का आयोजन बिहार राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार की अध्यक्षता में पटना स्थिति होटल मौर्या में में दिनांक- 22 अगस्त, 2019 को बिहार राज्य स्थित सभी बैंकों के लिए एक दिवसीय बैठक का आयोजन कराया गया। जिसमें सभी बैंकों के अंचल प्रबंधकों ने भाग लिया। उक्त बैठक का मुख्य उद्देश्य वित्तीय वर्ष 2018-19 की प्रथम तिमाही के दौरान सरकारी बैंकों द्वारा किया गया किए गए कार्यों की समीक्षा।

बिहार राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की 69वीं बैठक में भाग लेते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, अंचल प्रमुख भागलपुर और अंचल कार्यालय, बेगूसराय के अंचल प्रमुख।

उक्त बैठक की 69वीं त्रैमासिक समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए श्री नितीश कुमार ने कहा कि युवाओं को बैंकों द्वारा समय से ऋण वितरण होने से बेरोजगारी कम होती है। बैंकों की भूमिका काफी सराहनीय रही है। उन्होंने बैंकरों से अपील करते हुए कहा कि बिहार के विकास के लिए बैंकिंग जगत की सेवाओं की जरूरत है। अगर बैंक समय से रोजगार के लिए युवाओं को ऋण प्रदान करने से हमारे बिहार राज्य की तस्वीर बदल रही है। यह बैंकर्स ही हैं जो अपने कार्यों को सही दिशा में अंजाम देते हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री ने कहा कि बैंक हर पंजायत में अपनी शाखा खोले और इस हेतु राज्य सरकार हर तरह की सहायता देने को तैयार है। ग्राम पंचायतों में बन रहे सरकारी भवन में बैंकों को शाखा खोलने के लिए स्थान दिया जाएगा। बैंक की सुरक्षा हमारी ज़िम्मेदारी है। इसके आगे उन्होंने कहा कि बिहार राज्य ने स्टूडेंट कार्ड योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2018-19 में करीब 14000 छात्रों को इसकी सुविधा प्राप्त हुई है।

अपने संबोधन में श्री कुमार ने कहा कि सी डी रेसियों का राष्ट्रीय औसत 75% है, जबकि बिहार का सिर्फ 45% है। राज्य के पिछड़ेपन को दूर करने में बैंकिंग प्रणाली कोई बड़ी भूमिका हो सकती है। राज्य में विकेन्द्रीकृत तरीके से विकास हो रहे हैं। माइक्रो स्मॉल एवं मीडियम स्केल इंडस्ट्रीज़ को अगर बैंक का सहयोग मिला तो बिहार का और ज्यादा विकास होगा। बिहार के लोगों का बैंकों पर सबसे ज्यादा भरोसा है और वे अपने बचे हुए पैसे बैंक में ही जमा करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार की शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य और चिकित्सा को उच्च स्तरीय बनाने और चुस्त-रुस्त करने के लिए समय पर पैसे की आवश्यकता होती है।

श्री कुमार ने "जल- जीवन – हरियाली" अभियान के बारे में बताया कि यह योजना बहुत ही कारगर साबित हुई है। बिहार में सोलर एनर्गी पर आधारित कार्यों को बहुत ही जल्द लाया जाएगा जिससे बहुत सारे कार्यों को आसानी से किया जा सकता है। अपनी बातों को आगे जारी रखते हुए कहा कि बिहार की 89% आबादी गांवों में रहती है और उसमें से 76% आबादी कृषि पर निर्भर रहती है। श्री कुमार ने केसीसी की वित्तीय सीमा को और ज्यादा बढ़ाने की अपील की।

इसके पहले उक्त बैठक के शुभारंभ के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर श्री एमके जैन ने बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार का स्वागत किया और कहा है कि श्री कुमार को बैंकिंग प्रणाली पर पूरा भरोसा है और इस राज्य के विकास के लिए बैंकर्स की भूमिका

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, बिहार
69 वीं त्रैमासिक समीक्षा बैठक

सराहनीय रही है। बैंक हमेशा से ही सभी की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। बैंकों का राष्ट्रीयकरण भी इसी उद्देश्य से किया गया था कि सभी लोगों को बैंकिंग सुविधाएं प्रदान कर उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया जाए ताकि समाज के निर्माण में सभी की भूमिका महत्वपूर्ण हो। रोड मैप निर्धारण और भौगोलिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए बैंकों को अपने लक्ष्य प्राप्त करना है। विभिन्न राज्यों द्वारा निर्मित वित्तीय शिक्षा पर आधारित राष्ट्रीय योजनाओं को उल्लेखित करते हुए उन्होने कहा कि राज्य शिक्षा बोर्ड को चाहिए कि वे स्कूल पाठ्यक्रम को आधार मानते हुए वित्तीय शिक्षा कार्यपुस्तिका को एकीकृत करे।

पंचायत भवन में खोले जाएँ बैंक, सरकार देगी मुफ्त में जगह। कोई किराया नहीं। गांव की पंचायत भवन में शाखा खोले जाने पर बिहार सरकार देगी पूरी सुविधा बसर्ते बैंक मुहैया कराए ग्रामीणों को सभी बैंकिंग सुविधाएँ। तीन महीने के अंदर खोले जाएँ वे सभी शाखाएँ जो अभी भी लंबित हैं।

उक्त बैठक के लिए भारतीय स्टेट बैंक ने संयोजक बैंक की भूमिका में इसका आयोजन कराया और उक्त बैंक के प्रबंध निदेशक श्री पी के गुप्ता ने कहा कि भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में बैंकों की भूमिका अग्रणी है। बैंकों ने आज भारत को विकसित राष्ट्र का सपना दिखाया है और भविष्य की 5 ट्रिल्यन इकॉनमी के लिए बैंकों की सेवाएँ सराहनीय रहेंगी। बैंकर्स को चाहिए कि वे किसी भी ग्राहक को ऋण प्रदान करने से पहले सभी तथ्यों की जांच पड़ताल कर ले। चूंकि बिहार मुख्यतः कृषि क्षेत्र के ऋण को प्राथमिकता देता है। बैंक विभिन्न उत्पादों के माध्यम से ऋण प्रदान करता है जिसमे से मुख्य रूप से केसीसी ऋण है और बैंकों ने केसीसी ऋण को अभियान के तौर पर लिया है। यह किसानों के सपनों को साकार करेगा और किसानों की आय को दुगुनी करके सरकार विजन को वास्तविक रूप देगा।

श्री गुप्ता ने कहा कि जीविका योजना भी काफी सराहनीय कार्य कर रहा है और बैंक स्वयं सहायता समूह के तहत उन्हें ऋण प्रदान करता है। इसके माध्यम से स्वरोजगार स्थापित कर आय में वृद्धि की जा सकती है। एमएसएमई ऋण का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि व्यापारियों और नए व्यवसाय करनेवालों के लिए 59 मिनट में ऋण प्रक्रिया के तहत अधिकांश लोगों को ऋण दिया जा रहा है। डिजिटल पेमेंट के तहत सभी राज्यों में 100% डिजिटल पेमेंट किया जाना है। इस हेतु जमुई जिला का चयन किया गया है।

बिहार के उप मुख्यमंत्री (वित्त) श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि बैंक के शाखा प्रमुखों और अंचल प्रमुखों के कार्यनिष्पादन को निर्धारित मानदंडों की प्राप्ति का मूल्यांकन कर उसे उनकी सेवा की गोपनीय रिपोर्ट में शामिल किया जाए इससे उनके कार्या की निष्पादन को परखा जा सकता है। और संबंधित पैमाने पर खड़े नहीं पाए जाने पर उन्हें सुधार के लिए कहा जाए।

गणमान्य वक्ताओं ने कहा कि बिहार को आर्थिक रूप से मदद करने में बैंकों की भूमिका अहम है और उनके पूर्ण सहयोग से ही बिहार आर्थिक रूप से मजबूत हो सके।

उक्त कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार के अलावा भारतीय रिजर्व बैंक के उप गवर्नर श्री एमके जैन, उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, ग्रामीण विकासमंत्री श्री श्रवण कुमार, उद्योगमंत्री श्री श्याम रजक, सहकारी विकासमंत्री श्री राणा रणधीर सिंह, शिक्षामंत्री श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा विकास आयुक्त, बिहार श्री शुभाष शर्मा और सरकारी विभागों के के अरतिरिक्त आरबीआई, नाबार्ड, डीएफ़एस, बैंकों और अन्य ईकाईयों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली की उपयोगिता- विद्वानों के विचार

कहा जाता है शब्द ही ब्रह्म है, शब्द आभूषण है, शब्द सम्प्रेषण का माध्यम है, शब्द अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। यह शब्द ही है जो समाज, राष्ट्र व विश्व को जोड़ता है। अच्छे शब्दों के आगमन और उपयोग से साहित्य, समाज, लेखनकला, कहानी आदि को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। जब हमारे मस्तिष्क में अच्छे शब्दों का किसी विषय वस्तु के लिए आगमन व गुंजन होता है तो साहित्य, कला, विज्ञान, कहानी आदि के लिए उचित शब्द आने लगते हैं और सभ्य व उचित शब्दों के माध्यम से हम समाज एवं राष्ट्र को अच्छे संस्कार भी देते हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका भी अहम है। आज ज्यादातर हिंदी चैनल और समाचार पत्र उपलब्ध हैं जो सभी जनता के साथ संवाद स्थापित करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रचार हुआ है तो इसमें हिंदी सिनेमा की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज हमें ऐसी हिंदी की जरूरत है जिसे आम जनता आसानी से समझ सके।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा के बीच अंतर सिर्फ इतना है कि राजभाषा सिर्फ सरकारी कार्यालयों तक सीमित है जबकि राष्ट्रभाषा जन-जन की भाषा है। राष्ट्रभाषा पूरे उस देश के पूरे राष्ट्र की भाषा होती है। राजभाषा का कार्यान्वयन करना हम सभी का परम दायित्व है। आज भारत को ऐसी हिंदी की जरूरत है जिसे आम जनता आसानी से समझ सके।

उक्त विचार यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने दिया।

भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग), नई दिल्ली के अध्यक्ष व निदेशक प्रोफेसर अवनीश कुमार ने कहा कि हिंदी के माध्यम से हम आम जनता की बातों को समझ सकते हैं और उनके साथ आसानी से संप्रेषणीयता स्थापित कर सकते हैं। आज हिंदी माध्यम से अनेकों पुस्तकें उपलब्ध हैं जिसका देश-विदेश में भी प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी को तकनीक के साथ जोड़कर इसे सरल और सुगम बनाया गया है। हिंदी भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानक और प्रमाणिक भाषा है। आयोग हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु अनुदान राशि भी प्रदान करता है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूचि में शामिल विभिन्न भाषाओं में कार्य किया जाता है। वहाँ के शब्दों को विशेष रूप से परिमार्जित कर शब्दकोश बनाए जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के संयुक्त सहयोग से आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से सरकारी क्षेत्र के विभिन्न कार्यालयों को लाभ हुआ है। इसके प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्य करने में सहायता मिलेगी। वास्तव में, भाषा के विकास के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह ने अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब भाषा को विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़ा जाता है तो उसमें निरंतर निखार आती है और वह भाषा नई दुनिया के साथ चल पड़ती है। यह भाषा की महिमा है कि वह ज्यादा से ज्यादा से लोगों के साथ सही रूप में संवाद

स्थापित कर लोगों को लाभान्वित करती है। तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों पर विशेषज्ञों द्वारा काफी गहनता के साथ विचार-विमर्श करने के उपरांत ही उसे अनुमोदित किया जाता है।

डॉ. कुमार ने अपने आयोग की योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि आयोग की स्थापना भारत के संविधान के अनुच्छेद 344 के खंड (4) के उपबंधों के अधीन महामहिम राष्ट्रपति के 1960 के आदेश के द्वारा दिनांक 1 अक्तूबर 19610 को की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित सिद्धांतों का निरूपण करना है। आयोग द्वारा निर्मित या अनुमोदित की गई नई शब्दावली का प्रयोग करते हुए मानक वैज्ञानिक पाठ्य-पुस्तकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द-कोशों का निर्माण करना तथा विदेशी भाषाओं की वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में करना।

उन्होंने आगे कहा कि आज "राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली की भूमिका व महता जरूरी है।" आयोग ने कई विषयों पर शब्दावली का निर्माण किया है जिससे अधिकांश लोग लाभान्वित हुए हैं। शब्दों को विभिन्न संदर्भों में उपयोग करना हमारे लिए काफी जरूरी है क्योंकि हर क्षेत्र व परिप्रेक्ष्य में शब्दों के अर्थ बदलते हैं। जैसे – Transfer मतलब स्थानांतर होता है यानि एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिवर्तन परंतु बैंकिंग जगत में पैसे का लेनदेन यानि एक खाते से दूसरे खाते में पैसे को Transfer करने पर हिंदी में इसकी मतलब अंतरण होता है । अर्थात एक खाते से दूसरे खाते में पैसे को भेजना ।

उक्त आयोग के डॉ. शाहजाद अहमद अंसारी ने कहा कि शब्दों के बिना दुनिया में सम्प्रेषण की क्षमता अधूरी है। शब्दों के अभाव में हम अपने संवाद को दूसरे के साथ स्थापित करने में पिछड़ जाते हैं। शब्द हैं तो साहित्य के लिए आभूषण हैं। साहित्य, कथा, कविता, लेख,आलेख,

कहानी को शब्दों के माध्यम से ही पिरोया जा सकता है। सही व प्रामाणिक शब्दों को सटीक जगह पर उपयोग करने से भाषा का विकास होता है। किसी भी शब्द को अगल-अलग संदर्भों में स्थितिनुसार व परिस्थितिनुसार उपयोग किए जाने उसका मतलब व अर्थ बदल जाता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द ऐसे होते हैं जिसे सही रूप में उपयोग किया जाता है। अधिकांश शब्द आम जनता के बीच के बीच से आते हैं और मानकीकृत करने के लिए उसे विशेषज्ञों के बीच से गुजरना होता है तब ये शब्द सही अर्थों में हमारे शब्दावली में शामिल होते हैं।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार कहा कि किस जगह पर कौन से शब्द का उपयोग किया जाए यह व्यक्ति के विवेक और समय व काल पर निर्भर करता है। शब्दों को बनाने व गढ़ने में समय तो लगता है परंतु सही समय व स्थान पर उचित शब्दों के उपयोग से ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को निखारता है। अगर किसी के पास शब्दों की कमी है तो वह व्यक्ति सीमिति शब्दों के सहारे ही अपनी बातों को रखता है परंतु वह एक अच्छा संप्रेषक व वक्ता नहीं बन सकता है। जब हमारे पास ज्यादा से ज्यादा शब्द भंडार होंगे तब हम अपनी बातों को तार्किक्त तौर पर बेहतर तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय "राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका" पर पहले व्याख्यानदाता के रूप में हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना के प्रोफेसर बलराम तिवारी ने कहा कि पारिभाषिक शब्दावलियों की भूमिका अहम है। पानी के लिए अगल-अलग राज्यों में विभिन्न तरीके से उसका उपयोग किया जाता है। जैसे - बंगाल में पानी को जल बोलते हैं, मराठी में पाणी बोलते हैं। उन्होंने आगे कहा कि शून्य, दशमलव, चिकित्सा विज्ञान आदि का आविष्कार भी भारत में ही हुआ परंतु हमने उसे पन्नों पर नहीं उतारा। शब्दों का उपयोग व्याकरण और उसकी वैज्ञानिकता के आधार पर की जाती है। यह पाया गया कि संदर्भों के अनुसार शब्दों के अर्थ बदलते हैं।

किसी भी भाषा के विकास के लिए उस भाषा के शब्दकोश विशाल होने चाहिए अर्थात अधिक से अधिक शब्द भंडार जिसके पास ज़्यादा से ज्यादा शब्द भंडार होंगे वह व्यक्ति अपनी बातों को विभिन्न तरीकों से रख सकता है। वह दूसरों को अपनी शब्दों के माध्यम से नए विचार दे सकता है। नई दुनिया को आगे बढ़ाने, विज्ञान को विकसित करने, साहित्य और ग्रंथ को आगे बढ़ाने, नई पीढ़ी को नई दिशा देने आदि के लिए शब्दों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुत सारे शब्द हम अपनी क्षेत्रीय भाषा या मातृभाषा में बोलते हैं, उससे संबंधित वाक्यों को भी बोलते हैं परंतु हम उन शब्दों को पन्नों पर नहीं ला पाते हैं। अगर उन शब्दों और वाक्यों को पन्नों पर उतारा जाए तो वह शब्द व भाषा आनेवाली पीढ़ी को भी मिलती रहेगी और इस माध्यम से शब्द और भाषा का विकास होता रहेगा।

कोई भी भाषा अपने व्यापक शब्दों से ही जुड़ी हुई होती हैं। शब्दों का व्यावसायिक एवं वैज्ञानिक भाषा के साथ ही विकास भी होता है। ज्यादा से ज्यादा शब्दों का संग्रह ही भाषा के विकास में अहम भूमिका निभाता है। विज्ञान, रेखागणित, बीजगणित, शून्य, दशमलव आदि को हमारे देश ने बनाया। परंतु अफसोस की बात यह है कि हमने इन सारी चीजों को पन्नों पर नहीं उतारा। अगर हमने इन सारी चीजों को पन्नों पर उतारा होता हो भारत की तस्वीर कुछ और ही होती।

अगले व्याख्यानदाता के रूप में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री बीरेन्द्र कुमार यादव ने कहा कि सभी के लिए शब्द महत्वपूर्ण है। शब्दों के बगैर हम ज्यादा चीजों को समझ नहीं सकते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों को विशेष तरीके से रखते हैं। यह शब्द मानकीकृत व प्रामाणिक होते हैं। अपने शब्द और अपनी भाषा से हर किसी को लगाव रहता है। हमारी पकड़ शब्दों पर होनी चाहिए ताकि सभी, सम्मेलन, कवि गोष्टी, ब्याख्यान आदि में विभिन्न शब्दों को विभिन्न तरीके से प्रस्तुत कर आगे बढ़ सकें। हमेशा से ही अनुवाद की भाषा, शब्दों का मानकीकरण होता रहा है ताकि नई पीढ़ी को भाषा के संवाद के साथ जोड़ा जा सके। हम अपनी बातों को शब्दों की कितनी गहराई तक और श्रोताओं के समक्ष किस तरीके से रख सकते हैं यह हमारे शब्दों के उचित उपयोग पर निर्भर करता है।

किसी भी शब्द का उपयोग करने से पहले उसके बारे में बारीकी से जान लेनी चाहिए और किस संदर्भ में कौन से शब्द का उपयोग करना है उसकी भी पहचान कर लेनी

चाहिए। शब्दों की भावना, उसके कर्म, कारक, स्थान, परिपेक्ष्य के बारे में पूर्ण जानकारी के साथ ही हमें उसका प्रस्तुतीकरण करना चाहिए अन्यथा सम्प्रेषण में गड़बड़ी हो सकती है।

अगले वक्ता के रूप में में राजनीति विज्ञान विभाग, मगध महिला महाविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, की प्रोफेसर कैप्टन पुष्पलता कुमारी ने " राजभाषा के कार्यान्वयन में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दालियों की भूमिका" विषय पर अपने विचार रखें और कहा कि हिंदी के "पैर" शब्द का उपयोग विभिन्न पर्यायवाची शब्दों से किया और सभागार को बताया कि हिंदी के पैर शब्द के लिए अनेकों शब्द हैं परंतु अँग्रेजी में पैर के लिए सिर्फ "Leg" शब्द ही है। हिंदी की महता पर विशेष प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वेद, पुराण, ग्रंथ, महाकाव्य आदि सभी में शब्दों के सहारे ही विषयवस्तु के प्रस्तुति की गई है। अधिकांश शब्दों के साथ उसकी भावनाएँ जुड़ी होती हैं। उससे उसका लक्ष्य, सार, संदर्भ, कल्पना आदि जुडी हुई होती हैं।

जब हम तकनीक के साथ किसी भाषा का जोड़ते हैं तो वह भाषा स्वतः ही विकसित होने लगती है। हमारे देश में कंप्यूटर या मोबाइल पर पहले अँग्रेजी भाषा ही लाया गया जिसकी वजह से हमने यह मान लिया था कि कंप्यूटर या मोबाइल अँग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हैं। परंतु ऐसा नहीं है। आज कंप्यूटर में विश्व की करीब 256 भाषाएँ हैं और मोबाइल में भी हम अपनी भाषा में काम कर सकते हैं।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ से पधारी मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. रजनी गुप्त ने कहा कि अगर शब्द न होते तो हम आज यहाँ एकत्रित नहीं होते। शब्दों के सहारे ही आज हम इस सभागार में उपस्थित हैं। क्योंकि शब्दों ने ही हमें जोड़कर यहाँ तक आने में हमारी मदद की है। चाहे प्रतिभागी हों, श्रोता हों, ब्याख्यानदाता हो या आयोजक हो सभी को आज इस मंच पर लाने में शब्दों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शब्दों से ही हमारे रिश्ते बनते और बिगड़ते हैं। शब्द की महता की बदौलत ही हम आज दुनिया को संस्कृति, सभ्यता, समाचार और अन्य गतिविधियों को आसानी से समझ सकते हैं। इसी के माध्यम से हम तार्किक और प्रखर वक्ता, लेखक, कवि, साहित्यकार, उपन्यासकर, कथाकार आदि बन सकते हैं। हमारी सोच के साथ शब्द भी चलते व बिचरते रहते हैं।

वर्तमान ने भाषा के क्षेत्र में भी काफी गिरावट आई है। आज की नवयुवा पीढ़ी की न तो अँग्रेजी उत्कृष्ठ है और न ही हिंदी। आज वे भाषा के बीच एक उधेरबून में फंसे हुए हैं। आज के बाजार में हिंदी और अँग्रेजी के बीच एक हिंग्लिश भाषा उभरकर आई है। जो किसी को उचित दिशा प्रदान करने में असक्षम है। भाषा को लेकर आज लोगों में द्वंद है। सही भाषा व शब्दों के उपयोग ने होने की वजह से संवाद स्थापित करने में कठिनाई होती है।

पहले दिन के आखिरी वक्ता के रूप में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, अगरतला से आए मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री अमलकरण सेठ ने "राजभाषा के विकास में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का योगदान- पृष्ठभूमि"

विषय पर पी पी टी के माध्यम से प्रकाश डाला। इसके तहत श्री सेठ ने संविधान और उसकी भूमिका पर विशेष बल देते हुए डॉ. रघुवीर और श्री रघुवीर सहाय के बारे में भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डॉ. रघुवीर ने भी शब्दावली पर बहुत अच्छा कार्य किया है। सही शब्द का सही जगह पर उपयोग करना ही बुद्धिमता है। सभी शब्दों के अपने अर्थ और संसर्ग होते हैं।

श्री करणसेठ ने कहा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन तकनीकी विश्व कोश का निर्माण, स्कूल-स्तर की शब्दावली का निर्माण, अखिल भारतीय शब्दावली की पहचान और प्रकाशन, निर्मित एवं परिभाषिक शब्दावली का प्रचार-प्रसार और उसकी विवेचनात्मक समीक्षा, हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तक निर्माण योजना, राष्ट्रीय तकनीकी शब्दावली का निर्माण आदि है। और इस आयोग ने अपने कार्यों को सही दिशा में अंजाम दिया है। किसी भी भाषा के शब्द गढ़े व बुने जाते हैं। जब किसी क्षेत्र विशेष में किसी शब्द का अधिकांश व्यक्तियों या समूहों या समुदायों द्वारा उसका उपयोग किया जाता है तो वह प्रचलित हो जाता है और उस विशेष भाषा के साथ जुड़ जाता है। भाषा के साथ उसकी लिपि बहुत मायने रखती है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, दिल्ली से आए मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डॉ सुधीर कुमार साहू ने पी पी टी के माध्यम से "पारिभाषिक शब्दावली को लोकप्रिय बनाने में ध्वनि परिवर्तन नियमों की भूमिका" के बारे में विशेष रूप से बताते हुए कहा कि ध्वनि के अनुसार ही सुनने वाले के साथ शब्द के अर्थ भी बदल जाते हैं। किसी भी शब्द की ध्वनि पर भी

अर्थ व संदर्भ निर्भर करता है। उन्होंने अक्षर और शब्दों की ध्वनियों पर विशेष प्रकाश डाला और कहा कि प्रत्येक अक्षर और शब्द की ध्वनियाँ ही श्रोताओं के लिए मायने रखते हैं। विभिन्न भाषाओं के लिए ध्वनियाँ अलग-अलग हो सकती हैं। कभी-कभी ध्वनि के एक ही उच्चारण होने के बावजूद भी अलग-अलग संदर्भों में उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाते हैं। साथ-साथ विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार भी ध्वनि और शब्दों में अंतर आ जाते हैं।

डॉ साहू ने पीपीटी के माध्यम से दर्शकों व प्रतिभागियों को यह बताया कि ध्वनि के माध्यम से शब्दों की भावना और अर्थ में परिवर्तन होता है। उन्होंने निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला: -

- कंप्यूटर अँग्रेजी पर नहीं, बाइनरी भाषा अर्थात शून्य एवं 1 पर आधारित है, जो भारत की देन है।
- यदि भारतीय अंक प्रणाली नहीं होती तो अंतरिक्ष विज्ञान, मिसाइल तकनीक, इंटरनेट आदि का विकास संभव नहीं हो पाता।
- भारतीय भाषाएँ यूरोपीय भाषाओं और अँग्रेजी से भी अधिक प्राचीन एवं समृद्ध हैं।
  अँग्रेजी की तरह हिंदी भी एक वैश्विक भाषा है।
  संस्कृत मूलों पर आधारित हिंदी का शब्द-भंडार अँग्रेजी की तुलना में अधिक समृद्ध है।
- यास्क रचित निघंटु में पृथ्वी के 21, मेघ के 30, रात के 23, सुबह के 16, नदी के 37, अश्व के 26 पर्याय दिए गए हैं।

- संस्कृत सदृश भाषा को पश्चिमी भाषा विज्ञानियों ने आदि भाषा, अर्थात भारत एवं यूरोप की सभी भाषाओं की जननी के रूप में स्वीकार किया है। अँग्रेजी सहित सभी यूरोपीय भाषाओं की प्रारंभिक शब्दावली संस्कृत मूल से निकली है।

उक्त संगोष्ठी के अगले सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार तिवारी ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली : प्रयोग एवं प्रासंगिकता विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी भी शब्द का उपयोग करने से पहले उसकी महता, संदर्भ, प्रासंगिकता, मौलिकता आदि के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए ताकि वाक्यों की सार्थकता और सारगर्भिता झलक सके। किसी एक शब्द के विभिन्न आयाम सिद्ध हो सकते हैं और उसकी महता व विशेषता अलग-अलग हो सकती है। उन्होंने शब्दों के विस्तार का वर्णन करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काफी सार्थक और प्रामाणिक है। हर प्रसंग व क्षेत्र के लिए एक ही शब्द के मतलब अलग-अलग हो सकते हैं। किसी भी भाषा का सम्पूर्ण विकास तभी हो सकता है जब उसके लिए मानक शब्दावली का निर्माण होता हो। हालांकि शब्दों के बारे में अभी भी कोई पूर्ण रूप से यह दावा नहेन कर सकता है कि किसी क्षेत्र के लिए एक ही शब्द विशेष का उपयोग किया जा सकता है।

डॉ. तिवारी ने कहा कि भाषा के साथ-साथ शब्दों का भी निरंतर विकास होता रहा है। जब नए शब्द आते हैं तो वे अपने साथ-साथ उसके लिए नई भाषा व वाक्य भी लेकर आते हैं। शब्दों के अनुरूप ही भाषा का भी उचित समय के साथ उपयोग किया जाता है। अगर शब्द नहीं तो भाषा का विकास भी संभव नहीं। शब्दों पर भी भाषा का विकास संभव है। शब्दों पर काफी चिंतन-मनन और मंथन किया जाता है। खासकर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को काफी गहनता से तरासा और पिरोया जाता है। उसे मानकीकृत करने के लिए कई संदर्भों ने जोड़कर बनाया जाता है।

इसी क्रम में पटना विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर राकेश रंजन ने राजभाषा के विकास: वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली विषय पर अपने विचारों को रखते हुए कहा कि राजभाषा का विकास तभी संभव है जब सभी कार्यालयों में और आम जनता के बीच इसका पूर्ण रूप से कार्यान्वयन किया जाता हो। सभी शब्दों में सरलता और सुगमता होनी चाहिए ताकि आम जनों तक वे संप्रेषित हो सके। सभी

शब्दों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बनाया जाना चाहिए ताकि तकनीक के साथ यह कारगर सिद्ध हो सके। कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक संसाधनों के माध्यम से भाषा का विकास हो रहा है। क्षेत्रीय भाषाओं में भी कार्य करने की सुलभता से आज आम जनता भी तकनीक के माध्यम से आसानी से संवाद स्थापित करती है। अब उन्हें तकनीक का उपयोग करने में भाषा की बाध्यता आड़े नहीं आती है। आज आम जनता अपनी भाषा में काम करना चाहती है और तकनीक ने उनके दुर्गम मार्ग को आसान बना दिया है। किसी भी विषय की अपनी शब्दावली अपने-आप में कुछ विशेषता को संजोय रहती है।

उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी के बारे में सभी वक्ताओं के ब्याख्यान के सार को यूको बैंक, गुवाहाटी अंचल कार्यालय के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री आलोक कुमार श्रीवास्तव ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि शब्दों के विकास और समृद्धि पर ही भाषा का उत्थान होता है। किसी भी भाषा के शब्दों का निर्माण और उसके शब्दकोश में शब्दों के जुडने से ही वह भाषा आगे बढ़ती है। आज हर क्षेत्र के लिए अलग-अलग भाषा है। हम जिस भाषा के शब्दों का जितना उपयोग करते हैं वह शब्द उतने ही प्रचलित होते जाते हैं। कुछ समय पहले हिंदी फिल्म के माध्यम से "गांधीगिरी" शब्द काफी प्रचलित हुआ था और लोगों की जुबान पर गांधीगिरी... गांधीगिरी शब्द का अत्यधिक उपयोग किया गया। जब हमारे देश में Demonetization अर्थात विमुद्रीकरण हुआ तो उस समय प्रिंट और एलेक्ट्रोनिक मीडिया ने "नोटबंदी" शब्द का उपयोग किया और वही शब्द प्रचलित हो गया। यानि जो शब्द आम जनता के लिए सुग्राही व सुगम हो वही शब्द बाजार में चलता है। शब्दों का सरलीकरण किया जाना मतलब आम जनता के साथ जुड़ना है क्योंकि जनता सरल और सुगम शब्दों को अपनाती है। कठिन शब्द सिर्फ किताबों के लिए या कुछ विद्वानों के लिए हो सकते हैं। जो ज्यादा समय तक नहीं चलते हैं। हमें भी आज सरल और सुग्राही शब्दों को अपनाने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी का सार: - भारत के जानेमाने व विभिन्न राज्यों व विश्वविद्यालयों से पधारे वक्ताओं ने शब्दावली की भूमिका पर विशेष बल देते हुए कहा कि शब्द से ही किसी भी भाषा, साहित्य, उपन्यास, नाटक आदि का विकास हो सकता है। यह समय अपनी भाषा को परिमार्जित करते हुए उसके उत्थान का समय है। हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा के बीच एक सामंजस्य स्थापित कर आज की पीढ़ी को विश्व पटल पर उसकी उपयोगिता को बताने की आवश्यकता है। अपनी भाषा से से राष्ट्र का विकास हो सकता है। इस बाजारवाद की दुनिया में जिस भाषा को बाजार अपना लेता है वही भाषा चलती और विकसित होती है। अगर हमें अपनी भाषा को बचाना है तो उसे नई तकनीक और विज्ञान के साथ जोड़ना होगा। क्योंकि अधिकांश लोग तकनीक और विज्ञान का उपयोग करते हैं।

किसी भी भाषा के शब्दों को वैज्ञानिक आधार पर तर्क के साथ प्रमाणिक होनी चाहिए। चाहे वह भाषा राष्ट्र की हो या विश्व की। सभी भाषा की विभिन्न क्षेत्रों में अपनी-अपनी सार्वभौमिकता झलकती है। जो भाषा प्रामाणिक और सुग्राही होगी उसे जनता स्वतः ही अपना लेती है और वही भाषा बाजार की भाषा हो जाती है और उसे पुष्पित व पल्लवित होने में ज्यादा समय नहीं लगता है। आज जरूरत है भाषा को तकनीक के साथ जोड़ने और उसे आसान से आसान बनाने की है। किसी ने कहा है कि अगर किसी राष्ट्र या स्थान विशेष को गुलाम बनाना हो तो उससे उसकी भाषा छीन लो और उसपर अपनी भाषा थोपकर राज करो। आज यह नितांत आवश्यकता है कि हम अपनी भाषा की बाजूद को हर हाल में बचाए रखें।

यूको बैंक द्वारा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम

अंचल प्रबंधक श्री दिलीप सिंह राठौड़ का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए बांका जिला के गणमान्य ग्राहक।

मंचासीन अंचल प्रमुख और उप अंचल प्रमुख, यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना और साथ में बांका शाखा के शाखा प्रमुख व अतिथि

ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के उद्देश्य से यूको बैंक, बांका जिला के अधीन आनेवाले गाँव के लोगों के लिए ग्रामीण स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ और उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने की।

उक्त सभा को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री राठौड़ ने बताया कि वहाँ के ग्रामीणों को बताया कि स्वरोजगार के माध्यम से हमारे देश से बेरोजगारी कम हो सकती है। अपना स्वयं का रोजगार करने से आपके पास अपना मालिकाना हक होगा। आप व्यवसाय के बारे में स्वयं अपना निर्णय ले सकते हैं कि आपको आगे क्या करना है और व्यवसाय को कैसे और किस माध्यम से उसे उन्नत बनाना है। समय के साथ निर्णय में परिवर्तन होने से आप अपने रोजगार को और भी विकसित कर सकते हैं।

यूको बैंक द्वारा आयोजित ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारे प्रशिक्षणार्थी

उक्त प्रशिक्षण में लाभार्थियों को स्वरोजगार कैसे किया जाए, कौन से व्यापार कम लागत में अधिक मुनाफा दे सकता है, कम समय में किस प्रकार से अपने व्यवसाय में वृद्धि की जाए और भविष्य में व्यवसाय को कैसे आगे बढ़ाया जाए। इसमें छोटी-छोटी बचत करने और अपनी पूंजी निर्माण करने तथा इस माध्यम से दूसरों को भी कैसे जोड़ा जाए के बारे में विशेष रूप से बताया गया।

उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि स्वरोजगार योजना के तहत ज्यादा से ज्यादा ग्रामीणों को लाभ हुआ है। इसके उनके आर्थिक स्थिति में सुधार आई है। संबंधित रोजगार के बारे में पूर्ण जानकारी रखने पर और अनुभव के आधार पर बैंक अपनी ऋण देता है। परंतु लाभार्थियों को बैंक द्वारा दी गई राशि को संबंधित व्यवसाय के लिए ही उपयोग किया जाना चाहिए किसी अन्यत्र या इतर कार्यों में उसे नहीं लगाना चाहिए। स्वरोजगार के माध्यम से आप अपनी आर्थिक स्थिति को और ज्यादा मजबूत कर सकते हैं। आपकी उन्नति से ही आपके परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है। आप चाहे तो अपने व्यवसाय के साथ अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकते हैं। साथ ही साथ इससे आप रोजगारदाता की श्रेणी में आ जाएंगे।

स्वतंत्रता मतलब ज़िम्मेदारी

अगर आज हम स्वतंत्र भारत में आजादी की सांस ले रहे हैं इसके पीछे हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों, वीर शहीदों और न जाने कितने गुमनाम शहीदों की कुर्बानियाँ रही होंगी जिनकी बदौलत हम यह फक्र के साथ कहते हैं कि हम आजाद देश के नागरिक हैं और आजाद भारत में ही रहेंगे। किसी भी मूल्क के लिए आजादी महज एक शब्द नहीं है बल्कि इसमें कुर्बानियाँ, त्याग, तपस्या, जूनून आदि समाहित है। हम स्वतंत्र भारत में जन्म लिए हैं। शायद हमने इसकी महता को करीब से नहीं समझा होगा परंतु जो व्यक्ति गुलामी की पीड़ा को झेला हो, कष्टों से उभरा हो, अंधकारों में अपने जीवन को डाला हो, जो रौशनी के लिए तड़पा हो। जिसने यातनाएँ झेली हो। वही व्यक्ति सही मायने में स्वतंत्रता की महता को समझ सकता है। उक्त बातें यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने देश के 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोलोलन करने के बाद कहा।

उपस्थित यूकोजन की सभा को संबोधित करते हुए श्री कुमार ने कहा कि हमें अपने कार्यालय के सभी कार्यों को संविधान के तहत जारी नियमों और विधि के अनुसार ही करना चाहिए। स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं कि हम अपनी जरूरतों के खातिर किसी को तकलीफ पहुंचाएँ। स्वतंत्रता के साथ हमें जिम्मेवारियों भी दी गई हैं। अगर हम स्वतंत्र हैं तो हमारे साथ जिम्मेवारियों भी हैं। बिना जिम्मेवारी के सही मायने में स्वतंत्रता की कोई भी महता नहीं हैं। आज हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की जरूरत है। अगर हमें किसी भी कार्य को निष्पादित करना है तो हमें उसे पूरी ज़िम्मेदारी और निष्ठा के साथ करना होगा।

नई तकनीक के माध्यम राजभाषा का विकास संभव

दिनांक- 21.09.2019 को आयोजित लिपिकों के लिए राजभाषा कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर उद्घान करते हुए उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार साथ में मुख्य प्रबंधक श्री एसएन श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक सुश्री संगीता कुमारी और वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा डॉ सुनील कुमार।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तकनीक के माध्यम से जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव आया है। आज कार्यालयों की कार्यसंस्कृति में परिवर्तन हुआ है। बैंकों के कार्यों को आज आसानी से किया जा रहा है। सरकारी कार्यों को और बेहतर तरीके से किया जा रहा है। अधिकांश कार्यालयों की कार्यप्रणाली में गतिशीलता का कारण भी नई तकनीक है। इससे पारदर्शिता के साथ-साथ समय की भी बचत होती है। ऐसा पाया गया है कि अधिकांश कार्यों को सरलता और सुगमता से किया जा रहा है। वर्तमान

में तकनीक ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अद्वितीय भूमिका का निर्वाह किया है। बहुत सारे कार्यों को इलेक्ट्रोनिक तकनीक के माध्यम से किया जा रहा है। विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का पत्राचार भी ईमेल के माध्यम से त्वरित रूप में हो रहा है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग लेनदेन व कारबार भी कम समय में आसानी से किया जा रहा है। हमारी कार्य क्षमता की वृद्धि में मशीन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। त्वरित रूप से कार्यों का निष्पादन करने से हमारे व्यवसाय में वृद्धि हो रही है। उक्त बातें यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कही।

उक्त कार्यशाला में मुख्य प्रबंधक श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव ने कहा कि किसी भी देश के विकास की लिए भाषा की बहुत ही महता है। अगर कोई भी विदेशी हमारे देश में आता है तो वह सबसे पहले यह सोचता है कि इस देश की भाषा कौन सी है जिसके माध्यम से वह संवाद स्थापित कर अपनी यात्रा को सुखद बना सकता है। परंतु विभिन्न भाषा होने की वजह से वह बेहतर तरीके से अपनी बातों को संप्रेषित नहीं कर सकता है। उसे भाषा को लेकर कठिनाई महसूस होती है। वह स्थानीय लोगों से बहुत सारी जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता है। कहीं न कहीं संवाद में कमी रह जाती है। अगर हमारे देश को एक भाषा के सूत्र में पिरोया जाता है तो इससे विदेशियों के साथ-साथ हमारे देश के लोगों के लिए भी बेहतर होगा। यह भाषा ही है जो हमारे संबंधो को मधुर बनाती है। ग्राहक सेवा में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे हम ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को जोड़ सकते हैं। ग्राहकों को उनकी भाषा में सेवा देने से हमारे बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि हो सकती है। हर किसी को अपनी भाषा प्यारी होती है।

मुख्य प्रबंधक सुश्री संगीता कुमारी ने कहा कि राजभाषा हिंदी विकास निरंतर हो रहा है। आज मोबाइल और कंप्यूटर पर भी बोलकर टाइप किया जा रहा है और ऐसा पाया गया है कि कम समय में ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में हो रहा है। आज तकनीक ने हमारे कार्यों को आसान से आसान कर दिया है। हमें अपनी भाषा में काम करके गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। जितनी आसानी से किसी बात को हम अपनी भाषा में समझ सकते हैं शायद दूसरी भाषा में नहीं। हो सकता है हम कार्यालय के सभी कार्यों को हिंदी में नहीं कर सकते हो

परंतु अपने दैनिक के उन कार्यों को जरूर से कर सकते हैं जो हमारे अधीन है। हमें सिर्फ अपनी ओर से अच्छी पहल करने की आवश्यकता है।

सुश्री संगीता ने कहा कि लिपिक वर्ग के स्टाफ सदस्य किसी भी शाखा के आधार स्तम्भ होते हैं वे शाखा की पीलर की तरह होते हैं। वे फ्रंट लाइन पर होते हैं। वे किसी भी ग्राहको को आसानी से समझ सकते हैं। वे अपने ग्राहकों को बैंक के नित नए उत्पादों के बारे में उन्हें बता सकते हैं।

उक्त कार्यशाला के सभी सत्रों का संचालन अंचल कार्यालय, पटना में पदस्थापित वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुनील कुमार ने किया और उन्होंने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में किस प्रकार से गति लाई जाए। हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट कैसे भरा जाए। वाउचर कैसे तैयार करें। नई तकनीक के माध्यम से हिंदी पत्राचार को कैसे बढ़ाया जाए आदि के बारे में विशेष जानकारी प्रदान किया।

वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा विचारों का सृजन व परामर्श हेतु बैठक

बैंकिंग जगत में विशेष बदलाव लाने, भारतीय बैंकिंग प्रणाली को विश्वस्तरीय बनाने, भारत को 5 ट्रिल्यन डॉलर इकॉनमी के रूप में लाने, उसके कर्मचारियों की कार्यकुशलता में वृद्धि करने और कार्य निष्पादन में गतिशीलता लाने के उद्देश्य से दिनांक: 22 व 23 अगस्त.2019 को अंचल प्रमुखों की बैठक का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में विभिन्न बैंकों के अंचल प्रमुखों ने बैंकिंग क्षेत्र में त्वरित विकास हेतु अपने विचारों और सुझावों से अवगत कराया। उक्त विचार मंथन और परामर्श कार्यक्रम में अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने भाग लिया और यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना की ओर से प्रतिनिधि के तौर पर उन्होंने अपने विचारों को रखा।

सरकारी बैंकों में निगम नियंत्रण, भारत के एमएसएमई हेतु ऋण, सरकारी बैंकों में तकनीक का उपयोग, खुदरा ऋण- एक सुनहरा अवसर, कृषि ऋण, भारत में निर्यात ऋण- चुनौतियां व नीति विकल्प, वित्तीय ग्रिड स्थापित करने की अवश्यकता–पीएमजेडीवाई को आगे बढ़ाना और 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए बैंक ऋण हेतु सक्षम करना।

किसानों की आय को दुगुनी करनी होगी। जल शक्ति, ग्रीन इकॉनमी हेतु मदद, सभी के लिए आवास, स्वच्छ भारत, महिला सशक्तिकरण, एमएसएमई / मुद्रा, स्टैंड-अप-इंडिया, शिक्षा ऋण, ब्लू इकॉनमी, निर्यात ऋण, डिजिटल इकॉनमी, तकनीक, वित्तीय समावेशन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, इज ऑफ लिविंग, स्थानीय प्राथमिकताओं के संरेखण, कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारियाँ (कॉर्पोरेट सोशल रिपोन्सिबिलिटी) आदि मुद्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

उक्त बैठक मुख्य रूप से भारत के भविष्य की बैंकिंग के बारे आयोजित की गई थी जिसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार रखें और बताया कि किस तरीके से भारतीय बैंकिंग को विकसित किया जा सकता है। आज की बैंकिंग को उन्नत बनाने की जरूरत है। इसे आम जनता के साथ सेवरत करने की आवश्यकता है। खासकर वित्तीय समावेशन के माध्यम से हम ग्रामीणों को बेहतर बैंकिंग सुविधाओं और सेवाओं से जोड़ सकते हैं।

विद्याझांप शाखा में प्रधानमंत्री बीमा योजना शिविर का आयोजन

यूको बैंक,विद्याझांप शाखा ने प्रधानमंत्री बीमा योजना को आम जनता तक पहुंचाने के लिए आस पास के गांवों में विभिन्न तिथियों में उक्त शिविर का आयोजन किया। संबन्धित शाखा के शाखा प्रमुख और स्टाफ सदस्यों ने ग्रामीणों को उक्त योजना के लाभ से अवगत कराया और उससे अधिकांश ग्रामीणों को जोड़ा।

साइबर अपराध और उसे रोकने के उपाय

" हलऊ सर! हमार खतवा से पचास हजार रूपइयवा कट गया है सर! पईसवा कटने का मेरे मोबइलवा पर मैसेज आया है! एटीएम कार्डवा तअ हमरे लागे ही है सर! हम तअ डेढ़- दू-महीना भर से एटीएम मशीनवा के पास गइबे नहीं किए हैं! लेकिन हमर खतवा से पईसवा कईसे कट गया सर! बैंकवा में पईसवा रखले-रखले उड़ जाता है काअ? हमरा पईसवा लौटा दीजिए सर, नहीं तअ हम पुलिस टिशनी में आपका कांपलेंट (शिकायत) करेंगे! हमनी सबन बड़ी मेहनत से पईसवा जोड़-जोड़ के जमा करअ हिला सर! दू महीना बाद हमर बेटिया के शादी है सर । हमर बेटवा दिल्ली में पढ़ता है। ओकरा ला भी पईसवा भेजना है। हमर ई पईसवा कब तलक आ जाईगा सर? हलऊ सर! हम काअ करें सर? हमरा मदद कीजिए सर! नहीं तअ हम कहीं के नहीं रहेंगे सर।.....

यह व्यथा एक बैंक खाताधारक (ग्राहक) की है जो मगही और हिंदी (भाषा) मिलाकर बोल रहा है और बैंक में अपनी शिकायत ब्यौं कर रहा है कि उसके खाते से पचास हजार रुपए (रु. 50,000/-) कट गए हैं जबकि उसके संबंधित खाते का एटीएम उसके पास है। यह शिकायत आज आम शिकायत सी हो गई है। एटीएम कार्ड की क्लोनिंग कर कपटकर्ता आसानी से बैंक खाताधारकों के पैसे को निकाल लेते हैं और इसका पता तब चलता है जब खाताधारक के मोबाइल पर इसका संदेश जाता है।

आजकल ऐसे ही लॉटरी के नाम पर ठगी की धंधा काफी तेजी से चल रहा है। केबीसी के स्टाइल में मोबाइल पर एक असाना सा प्रश्न (संकेत/ clue के साथ) चार विकल्प (ऑप्शन) के साथ भेज दिया जाता है और ग्राहक उसका जवाब आसानी से दे देता है तुरंत ही एक मैसेज आता है। बधाई हो! (Congratulations!) आप काफी भाग्यशाली हैं। पूरे भारत में यह प्रश्न भेजा गया था, जिसमें करोड़ों लोगों ने भाग लिया परंतु इसका सही जवाब सिर्फ आपने दिया है। आप सात लाख रुपए (रु. 7.00 लाख) का ईनाम जीत गएँ हैं। आपके इनाम की राशि आपके खाते में भेज दी जाएगी। तुरंत ही एक कॉल आता है बधाई हो सर! / मैडम! आप हमारे इस प्रश्न के विजेता हैं। कृपया आप अपने खाते का विवरण हमें भेज दें ताकि हम पुरस्कार की राशि को आपके खाते में जमा कर सकें। आप चाहे तो अपने खाते का विवरण हमें अपने मोबाइल से भी बता सकते हैं ताकि हम संबंधित राशि को तुरंत ही आपके खाते में जमा कर सकें।

कॉल सेंटर पर बैठे कपटकर्ता फोन करता है कि सर मैं आपके बैंक से बोल रहा हूँ। आपके एटीएम कार्ड का अंतिम चार अंक (.....4218) ये हैं। कृपया अपने एटीएम कार्ड का पूरा नंबर, एक्सपायरी डेट और सीवीवी नंबर बताएं। ग्राहक बता देता है। फिर कपटकर्ता कहता है कि आपके मोबाइल पर एक ओटीपी नंबर आया होगा कृपया उसे बताएं। फिर ग्राहक को याद आता है कि सीवीवी नंबर, पासवर्ड, पिन नंबर, ओटीपी आदि किसी को भी नहीं बताना चाहिए। ग्राहक कपटकर्ता से कहता है कि ये सब तो किसी को नहीं बताना चाहिए। फिर कपटकर्ता चालाकी से कहता है कोई बात नहीं, आप नहीं बताइये फिर आप के इनाम के सात लाख रुपए (रु. 7.00 लाख) आने में एक से दो महीने लग जाएंगे। अगर आप अभी ओटीपी नंबर बता दें तो आपके इनाम का पैसा अभी आ जाएगा। ग्राहक कपट कर्ता के चंगुल में आ जाता है और ओटीपी बता देता है। फिर कुछ ही मिनटों में ग्राहक के खाते से नब्बे हजार रुपए साँय-साँय (तुरंत-तुरंत) निकलने के मैसेज आने लगते हैं और ग्राहक ठगी का शिकार बन जाता है।

आजकल इंटरनेट के माध्यम से हम सारी दुनिया के साथ जुड़ गए हैं। आज अधिकांश लोग इंटरनेट पर आश्रित हैं। दुनिया की अधिकांश चीजों को इंटरनेट ने एक प्लेटफॉर्म पर ला दिया है। मानो सारी दुनिया मुट्ठी में समाहित हो गई हो! आज हमारी दिनचर्या की अधिकांश जरूरत की चीजों को इंटरनेट ने सुलभ व सुगम बना दिया है। सामाजिक नेटवर्किंग, ऑनलाइन ख़रीदारी, जानकारी का आदान-प्रदान, गेमिंग, ऑनलाइन पढ़ाई, ऑनलाइन नौकरियां आदि जिसके बारे में मनुष्य कल्पना कर सकता है, वे सारी चीजें बस इंटरनेट के एक क्लिक से उपलब्ध हो जाती हैं। परंतु जो चीजें हमें आसानी से मिल जाती हैं उसके साथ हमें काफी सावधानी के साथ संभलकर भी चलना चाहिए।

वर्तमान में, इंटरनेट का उपयोग अधिकांश क्षेत्रों में किया जा रहा है। इंटरनेट के बढ़ते फायदों के साथ साइबर अपराध जैसे भयावह मुद्दे भी उभर कर आए हैं। साइबर अपराध अलग-अलग तरीकों से घटित होते हैं। कुछ वर्षों पहले तक इन सारी चीजों के बारे में इतनी जागरूकता नहीं थी। अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी साइबर अपराध की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

क्या है साइबर अपराध ?

साइबर अपराध में आधुनिक दूरसंचार नेटवर्क (इंटरनेट, मोबाइल फोन) का अवैध रूप से उपयोग किया जाना ताकि व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के खिलाफ अपराध किया जा सके, उनको प्रताड़ित किया जा सके, जानबूझकर उनको शारीरिक या मानसिक नुकसान एवं उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया जा सके। साइबर अपराध द्वारा किसी व्यक्ति या राष्ट्र की सुरक्षा एवं वित्तीय स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। साइबर अपराध एक अवैध कार्य है जहां कंप्यूटर को साधन या लक्ष्य या दोनों ही तरीके से इस्तेमाल किया जाता है।

आज दुनिया भर में लोग ऑनलाइन इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे लोगों की निजी जानकारियों की चोरी कर रहे हैं जिसे साइबर अपराध कहते हैं। आज के अत्याधुनिक तकनीकी युग में लोग अपना जीवन सरल बनाने के लिए कई उपकरणों का प्रयोग करते हैं। वैश्वीकरण के माध्यम से दुनिया भर के लोग एक दूसरे से आसानी से जुड़ पाने में सक्षम हुए हैं। तकनीक का आसानी से उपलब्ध होना एवं इसका लगातार प्रयोग, लोगों के संवाद के तरीकों एवं जीवन के संचालन पर गहरा प्रभाव डालता है।

साइबर अपराध को दो तरह से वर्गीकृत किया गया है : -

1. पहला, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को लक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
2. दूसरा, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

<u>अनाधिकृत उपयोग एवं हैकिंग</u>

अनाधिकृत उपयोग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर के मालिक की अनुमति के बिना कंप्यूटर का किसी भी प्रकार से अवैध उपयोग किया जाता है। हैकिंग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर प्रणाली में अवैध घुसपैठ करके उसको नुकसान पहुंचाया जाता है।

<u>वैब हाईजैकिंग</u>

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें किसी व्यक्ति की वेबसाइट पर अवैध रूप से सशक्त नियंत्रण कर लिया जाता है। इस प्रकार वेबसाइट का मालिक उस वेबसाइट पर नियंत्रण एवं ज़रूरी जानकारी खो देता है।

<u>साइबर स्टॉकिंग</u>

यह एक ऐसा अपराध है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को बार-बार उत्पीड़न का शिकार बनाया जाता है; पीड़ित का पीछा करके, तंग करके, कॉल द्वारा परेशान करके, संपत्ति के साथ छेड़छाड़ करके। स्टॉकिंग के उपरांत पीड़ित को मानसिक एवं शारीरिक रूप से हानि पहुंचाना मकसद होता है। स्टौकर (अपराधी) पीड़ित की सारी जानकारी अवैध रूप से इकट्ठा करके एवं इंटरनेट पर उनकी गलत छवि दिखाकर हानि पहुंचाने का लक्ष्य रखते हैं, ताकि भविष्य में भयादोहन करके उनका अनुचित लाभ उठा सकें।

<u>सॉफ्टवेयर पायरेसी</u>

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें वास्तविक प्रोग्राम की अवैध प्रतिलिपि बनाकर जालसाजी द्वारा वितरित किया जाता है। इसमें और भी अपराध शामिल है, जैसे सत्तवाधिकार उल्लंघन, ट्रेडमार्क उल्लंघन, कंप्यूटर सोर्स कोड की चोरी आदि शामिल है।

<u>सलामी अटैक/हमला</u>

यह एक तरीके का वित्तीय अपराध है। ठगी इतनी छोटी होती है कि पकड़ पाना बहुत मुश्किल होता है। उदाहरण के लिए अगर कोई बैंक कर्मचारी इस प्रकार की धोखाधड़ी करें और वह हर खाता धारक के बैंक खाते से हर माह ₹5 काटे, तो कोई भी इतनी थोड़ी धनराशि के कटने को पकड़ नहीं पाएगा, पर अपराधी के पास महीने

के अंत में काफी अच्छी मात्रा में धन राशि इकट्ठी हो जाएगी।

<u>सर्विस अटैक</u>

यह एक ऐसा अपराध है, ऐसा हमला है जिसमें पीड़ित के नेटवर्क या विद्युत संदेश पात्र को बेकार यातायात एवं संदेशों से भर दिया जाता है। यह सब इसलिए किया जाता है ताकि पीड़ित को जानबूझकर तंग किया जा सके या पीड़ित अपना ईमेल इस्तेमाल ना कर पाए।

<u>वायरस अटैक</u>

वायरस ऐसे प्रोग्राम को कहा जाता है जो कंप्यूटर के अन्य प्रोग्राम को संक्रमित करने की क्षमता रखते हैं अथवा अपनी प्रतियां बना कर दूसरे प्रोग्राम में फैल जाते हैं। यह दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर होते हैं जो अपने आप को किसी दूसरे सॉफ्टवेयर से जोड़ लेते हैं अथवा कंप्यूटर को हानि पहुंचाते हैं। ट्रोजन हॉर्स, टाइम बम, लॉजिक बम, रैबिट आदि, यह सभी दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर है। वायरस कंप्यूटर पर कुछ इस तरीके से प्रभाव डालते हैं कि, या तो कंप्यूटर में मौजूद जानकारी को बदल देते हैं या नष्ट कर देते हैं ताकि वह इस्तेमाल करने लायक ना रह पाए।

<u>फिशिंग</u>

यह एक कैसा अपराध है जिसमें पीड़ित को ईमेल भेजा जाता है, जो कि यह दावा करता है कि वह एक स्थापित उद्यम/ कंपनी द्वारा भेजा गया है ताकि पीड़ित से गोपनीय निजी जानकारी निकलवा सके अथवा पीड़ित के खिलाफ, उनको हानी पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जा सके।

<u>क्या होती है फेक (जाली/नकली) साइट?</u>

फेक (जाली/नकली) साइट के नाम से ही प्रतीत हो जाता है कि यह एक झूठी वेबसाइट है, जो हु-ब- हु आपके बैंक के वेबसाइट, खरीदारी करने वाली साइट या पेमेंट गेटवे के जैसा इंटरफेस होता है। ऑनलाइन ख़रीदारी या कोई भी ऑनलाइन लेन-देन करने के लिए जैसे ही आप यहां अपने क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग का यूजर नेम, लॉगिन पासवर्ड ट्रांजिक्सन पासवर्ड या ओ.टी.पी इंटर करते हैं, तो वो इस डिटेल्स को कॉपी कर लेता है और बाद में इसका प्रयोग कोई भी गलत तरीके से गलत कार्यों के लिए कर सकता है, जिसको आप और हम समझ नहीं पाते हैं कि यह गलत लेनदेन कैसे हो गया? फेक (जाली/नकली) वेबसाइट का संचालन एक संगठित ग्रुप के क्रिमिनल्स के द्वारा किया जाता है।

आज पूरी दुनिया इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से एकदूसरे से जूड़ी हुई है, जिसके बहुत सारे लाभ है और उसके साथ ही बहुत सारे खतरे भी हैं। जैसे इंटरनेट के माध्यम से चोरी, फ्रॉड और वायरस इत्यादि, नीचे दिए गए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रख कर काम किया जाए, तो साइबर क्राइम के शिकार होने का खतरा कम हो जाता है।

क्या न करें:-

- अपने इंटरनेट की बैंकिंग और बैंकिंग लेन-देन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साइबर कैफे, ऑफिस, पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ी वाले स्थान पर न करें। किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें। जब कभी भी आप अपने इंटरनेट बैंकिंग या किसी भी जरुरी अकाउंट में लॉगिन करें, तो काम खत्म कर अपने अकाउंट को लॉगआउट करना न भूलें और जब आप लॉगिन कर रहें, हो तब इस बात पर जरूर धयान दें कि पासवर्ड टाइप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे ऑप्शन रिमेम्बर पासवर्ड या कीप लॉगिन में क्लिक न करें। कभी भी आप अपने बैंकिंग यूजर नेम, लॉगिन पासवर्ड, ट्रांजिक्शन पासवर्ड , ओ. टी.पी, गोपनीय प्रश्नों या गोपनीय उत्तर को अपने मोबाइल, नोटबुक, डायरी, लैपटॉप या किसी कागज पर न लिखें, हमेशा आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जो की आपको आसानी से याद रहे और आपको इसे कहीं लिखने की आवश्यकता न पड़े।

लोगों को धोखा देने के लिए और अपनी चंगुल में फसाने के लिए अधिकतर स्कैमर्स (घोटाले बाज) फेक (जाली/नकली) साइट को प्रयोग मे ला रहे हैं, जिससे की लोगों को पता भी न चले और उनका काम भी आसानी से हो जाए।

- ❖ आप अपने कम्प्यूटर में अगर इंटरनेट का प्रयोग करते हैं, तो सबसे पहले आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर को पासवर्ड से सुरक्षित कीजिए, जिससे कोई दूसरा व्यक्ति बिना आपके जानकारी के आपका कम्प्यूटर प्रयोग न कर सकें। अगर आपका कम्प्यूटर सुरक्षित नहीं होगा, तो क्रिमिनल या कोई व्यक्ति आपके कम्प्यूटर से जरूरी जानकारियां चुरा सकता है और गलत कार्यों के लिए आपके कम्प्यूटर का इस्तेमाल भी कर सकता है। इसके साथ आप यह भी चेक करें की आपके कम्प्यूटर में लेटेस्ट सिक्योरिटी अपडेटेड इन्सटाल्ड है या नहीं। साथ ही यह भी चेक करें की आपका एंटी वायरस और एंटी स्पाई वेयर सॉफ्टवेयर ठीक से काम कर रहा है या नहीं और उसके वेंडर से जरुरी अपडेट्स आ रहा है या नहीं।
- ❖ हमेशा बहुत स्ट्रांग पासवर्ड का प्रयोग करें, जिससे आसानी से किसी को पता न चले, क्योंकि साइबर क्रिमिनल प्रोग्रामर ऐसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का निर्माण करते हैं जो कि आपके साधारण से पासवर्ड को आसानी से गेस कर सकता है। ऐसे में अपने आप को बचाने के लिए आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जिसका कोई दूसरा अनुमान न लगा सके और आप आसानी से याद भी रख सकें। आपका पासवर्ड कम से कम आठ कैरेक्टर का हो जो की लोअर केस लेटर्स, अपर केस लेटर्स, नंबर्स और स्पेशल कैरेक्टर्स का मिश्रण हो। अगर आप एक से अधिक अकाउंट्स का प्रयोग करते हैं, तो सभी के लिए अलग- अलग पासवर्ड का प्रयोग करें, अपना पासवर्ड कभी भी अपने नाम, पता, गली नंबर, जन्म तिथि, परिवार के सदस्यों के नाम, विद्यालय के नाम या अपने वाहनो के नंबर पर न बनाएं, जिसका दूसरों के द्वारा आसानी से अनुमान न लगाया जा सके।
- ❖ अपने सोशल मीडिया के अकाउंट को देखते रहें, अगर कभी आप अपने सोशल साइट्स के अकाउंट को डिलीट कर रहे हैं, तो उससे पहले आप अपनी सारी पर्सनल जानकारी को डिलीट कर दें और फिर उसके बाद आप अपना अकाउंट डीएक्टिवेट करें या डिलीट करें। आप किसी भी स्पैम ई-मेल का उत्तर न दे, अंजान ई-मेल में आए अटैचमेंट्स को कभी खोल कर न देखें या उस पर मौजूद लिंक पर क्लिक न करें। इसमें वायरस या ऐसा प्रोग्राम हो सकता है, जिसको क्लिक करते ही आपका कम्प्यूटर उनके कंट्रोल में जा सकता है या आपके कम्प्यूटर में वायरस के प्रभाव से कोई जरूरी फाइल डिलीट हो जाए और आपका ऑपरेटिंग सिस्टम करप्ट हो जाए।
- ❖ अगर किसी वेबसाइट पर कोई पॉपअप खुले और आपको कुछ आकर्षक गिफ्ट या इनाम ऑफर करे तब आप अपनी पर्सनल जानकारी या बैंक अकाउंट नंबर या बैंक से संबंधित कोई भी जानकारी न भरें। अगर आप किसी ऑफर का लाभ लेना चाहते हैं, तो आप सीधे रिटेलर के वेबसाइट, रीटेल आउटलेट या अन्य जायज साइट से संपर्क करें। आज के दौर मे इंटरनेट हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन इंटरनेट पर जरा सी ना समझी स्कैमर्स को साइबर क्राइम के लिए खुला निमंत्रण देता है।

साइबर अपराध को रोकने के उपाय

कंप्यूटर उपयोगकर्ता साइबर अपराध को रोकने के लिए विभिन्न तकनीकों को अपना सकते हैं –

- ➢ कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को हैकर्स से अपने कंप्यूटर की सुरक्षा के लिए एक फ़ायरवॉल का उपयोग करना चाहिए।
- ➢ कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को एंटी वायरस सॉफ्टवेयर जैसे McAfee या Norton एंटी वायरस के रूप में स्थापित करना चाहिए।

- साइबर विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि यूजर्स को केवल सुरक्षित वेबसाइट्स पर ही खरीदारी करनी चाहिए। वे अपने क्रेडिट कार्ड की जानकारी संदिग्ध या अजनबियों को कभी न दे।
- उपयोगकर्ताओं को अपने खातों पर मजबूत पासवर्ड विकसित करने चाहिए, अथार्त अक्षरों और संख्याओं को पासवर्ड में शामिल करें, एवं लगातार पासवर्ड और लॉगिन विवरण का अद्यतन करना चाहिए।
- बच्चों पर नजर रखे और उनके द्वारा इंटरनेट के इस्तेमाल को सिमित रखे।
- फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब की सुरक्षा सेटिंग्स की जाँच करें और सावधान रहे।
- हैकिंग से बचने के लिए जानकारी सुरक्षित रखें। अधिकांश संवेदनशील फ़ाइलों या वित्तीय रिकॉर्ड के लिए एंक्रिप्शन का उपयोग करें, सभी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए नियमित बैक-अप बनाएं, और इसे किसी अन्य स्थान पर संग्रहीत कर लें।
- उपयोगकर्ताओं को सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट का उपयोग करते समय सचेत रहना चाहिए। इन नेटवर्क पर वित्तीय लेनदेन के संचालन से बचें।
- उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर नाम, पता, फोन नंबर या वित्तीय जानकारी जैसे व्यक्तिगत जानकारी देते समय सावधान रहना चाहिए। सुनिश्चित करें कि वेबसाइट्स सुरक्षित हैं।
- एक लिंक या अज्ञात मूल के फ़ाइल पर क्लिक करने से पहले सभी चीजों का बुद्धिमता से आंकलन करना चाहिए। इनबॉक्स में कोई भी ईमेल न खोलें। संदेश के स्रोत की जांच करें। यदि कोई संदेह हो, तो स्रोत सत्यापित करें। कभी उन ईमेल का जवाब न दें जो उनसे जानकारी सत्यापित करने या उपयोगकर्ता के पासवर्ड की पुष्टि करने के लिए कहें।
- संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (A) के तहत सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति की आजादी दी गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इसे प्रोत्साहित करने में अहम रोल निभाया है। हालांकि अभिव्यक्ति की यह आजादी उसी सीमा तक है, जहां तक आप किसी कानून का उल्लंघन नहीं करते हैं और दूसरे को आहत या नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

साइबर क्राइम से बचने हेतु भारत सरकार के द्वारा किए गए उपाय :-

- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 पारित किया गया जिस के प्रावधानों के साथ साथ भारतीय दंड संहिता के प्रावधान शामिल रूप से साइबर अपराधों से निपटने के लिए काफी है इसके अंतर्गत 2 साल से लेकर उम्र कैद तथा दंड या फिर जुर्माने का प्रावधान है।
- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 जारी की गई जिसके अनुसार सरकार ने अति संवेदनशील सूचनाओं की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय अति संवेदनशील सूचना अवसंरचना केंद्र का गठन किया।
- सरकार के द्वारा कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम की स्थापना की गई जो कंप्यूटर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर की मॉडल एजेंसी है।
- सरकार ने सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता परियोजना शुरू की।

निष्कर्ष

साइबर अपराध एक गंभीर खतरे के रूप में विकसित हो रहा है। दुनिया भर की सरकारों, पुलिस विभागों और गुप्तचर इकाइयों ने साइबर अपराध के खिलाफ प्रतिक्रिया देना शुरू कर दिया है। सीमा पार साइबर खतरों पर अंकुश लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय पुलिस ने देश भर में विशेष साइबर सेल शुरू कर दी है और लोगों को शिक्षित करना शुरू कर दिया है, ताकि वे ज्ञान हासिल करें और ऐसे अपराधो से खुद को बचाएं। आज हर एक व्यक्ति को अपने स्तर पर साइबर अपराधों के विरोध में आवाज उठानी पड़ेगी और इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरत है साइबर शिक्षा की।

अगर आपके किसी पोस्ट पर या फिर किसी पोस्ट को शेयर करने से किसी की भावना आहत होती है या दो समुदायों के बीच नफरत पैदा होती है, तो आपको जेल

की हवा खानी पड़ सकती है। इसके तहत अगर आप फेसबुक, ट्विटर, टिक टॉक, शेयर चैट, यूट्यूब समेत अन्य सोशल मीडिया पर किसी भी तरह का आपत्तिजनक, भड़काऊ या फिर अलग-अलग समुदायों के बीच नफरत पैदा करने वाला पोस्ट, वीडियो या फिर तस्वीर शेयर करते हैं, तो आपको जेल जाना पड़ सकता है। साथ ही जुर्माना देना पड़ सकता है।

साइबर क्राइम को कम्प्यूटर क्राइम या इंटरनेट क्राइम के नाम से भी जाना जाता है। कम्प्यूटर्स और इंटरनेट के द्वारा की गई किसी भी तरह की आपराधिक गतिविधियां साइबर क्राइम की श्रेणी में आती है। साइबर क्राइम के माध्यम से कही दूर बैठा हैकर आपके सरकारी या महत्वपूर्ण कारोबारी दस्तावेजों या आपकी निजी महत्वपूर्ण जानकारी को इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से चुरा सकता है। साइबर क्राइम में गैर धन अपराध भी शामिल है जैसे की ई-मेल के माध्यम से स्पैम करना, किसी वस्तु विशेष की प्रचार के लिए मेल करना, किसी कंपनी के गोपनीय दस्तावेजों को सार्वजनिक करना, वायरस को मेल के माध्यम से फैलाना, प्रोर्नोग्राफी को बढ़ावा देना, आई. आर. सी (इंटरनेट रीले चैट) के माध्यम से गलत कार्यों को अंजाम देने के लिए ग्रुप चैट करना, सॉफ्टवेयर प्राइवेसी को बढ़ावा देना और सामान्य नागरिकों को परेशान करने के लिए कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से कोई भी गलत कदम उठाना उसके अर्न्तगत आता है।

अगर आप उक्त बिन्दुओं और सुझावों पर गंभीरता से अमल करते हैं तो आप साइबर क्राइम के शिकार होने से बच सकते हैं। सबसे पहले हमें इन सारी चीजों से सतर्क होना होगा। कभी लॉटरी या अचानक विजेता जैसी खबर पाकर मंत्रमुग्ध होने की जरूरत नहीं है बल्कि हमें और ज्यादा सतर्क और सावधान होने की आवश्यकता है। सतर्कता के अतिरिक्त जागरूकता भी जरूरी है ताकि हम सायबर क्राइम जैसी घटनाओं से बच सकें।

प्रस्तुतकर्ता:- डॉ. सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

धन्यवाद!